पौराणिक गप्प-दीपिका

लेखक :
आचार्य डॉ० श्रीराम आर्य
कासगंज (उ० प्र०)

प्रकाशक :
श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास
ब्यानिया पाड़ा, हिण्डौन सिटी (राज०) - ३२२ २३०

Scanned by CamScanner

ओ३म्

प्राक्कथन

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जब मानव कल्याण के लिए धार्मिक एवं सामाजिक क्रान्ति के क्षेत्र में पदार्पण किया तो उन्होंने यह अनुभव किया कि हमारी आर्यजाति के वर्तमान पतन का मूल कारण, ईश्वर पर विश्वास के स्थान पर नाना प्रकार के देवी देवताओं एवं पुराणों पर आस्था होना है। उन्होंने पुराणों को देखा और अनुभव किया कि पुराण ग्रन्थ भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिक लोगों के द्वारा समय-समय पर बनाए गए हैं। जिनमें मिथ्या कपोल कल्पित देवी देवताओं के चरित्रों की गाथाएँ एवं हमारे निष्कलंक ऋषि महर्षियों को बदनाम करने को गढ़ी हुई कहानियों का समावेश है। मिथ्या इतिहास, तीर्थों, व्रतों के वर्णन, उनके लिए मिथ्या माहात्म्यों की रचना करके पुराणों में लिखी गई है। जनता को पुराणों को धर्मशास्त्र मानने को प्रेरित किया गया है। इनके रचयिताओं ने बड़ी चतुराई के साथ ईश्वर के अवतार लेने की कल्पना की थी तथा महाभारतकालीन वेदव्यासजी को अवतार मानकर उन्हीं को पुराणों का रचयिता घोषित कर दिया। जिससे उनकी प्रामाणिकता में कोई सन्देह न कर सके।

महर्षि दयानन्दजी महाराज ने यह देखा कि मूर्त्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक-श्राद्ध, भूत, प्रेतवाद, यज्ञों में पशुबलि, बालविवाह, बहुविवाह आदि की कुप्रथा हमारी धार्मिक फूट आदि सम्पूर्ण दोषों का मूल कारण पुराण ही हैं। उन्होंने बड़े बलपूर्वक यह घोषणा की कि आर्यजाति के उत्थान के लिए इन पुराणों का विषमिश्रित अन्न के समान त्याग कर देना चाहिए। उन्होंने सोचा कि साधारण जनता यदि इनको पढ़ेगी तो उस पर उनकी खराब बातों का अवश्य प्रभाव पड़ेगा। महर्षि ने पुराणों की अनेक मिथ्या बातों की बड़े-कड़े शब्दों में अपने जगत्प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में आलोचना की है। पुराणों के ही प्रमाण देकर उनकी निस्सारता का पर्दाफाश किया है जिसका उत्तर आज तक भी कोई पौराणिक विद्वान् देने में समर्थ नहीं हो सका है।

ऋषि दयानन्दजी ने कभी यह नहीं माना कि पुराण व्यासजी ने बनाए

Scanned by CamScanner

थे। अतः उन्होंने पुराण बनाने वालों के लिए कटु शब्दों का प्रयोग किया है। महर्षि की यह योग्यता सही थी। पुराणों को जिन्होंने पढ़ा है वे यह बात भली प्रकार जानते हैं कि वे व्यासकृत न होकर अंग्रेजी राज्य काल तक में बनते रहे हैं। हमने इस विषय पर सप्रमाण 'पुराण किसने बनाये' इस पुस्तक में प्रकाश डाला है। यहाँ हमें यह बात बतलानी है कि महर्षि के द्वारा जो भी खण्डन पुराणों का किया गया, उससे जब देश में खलबली मची तो पौराणिक पण्डितों ने बजाय स्वस्थ शास्त्रार्थ करने के महर्षि के लिए अपशब्दों का प्रयोग अपने लेखों और वाणी से प्रारम्भ कर दिया। और आज भी अनेक पोप पण्डितगण आर्यसमाज को अपनी पुस्तकों व पत्रों में गालियाँ देने में तल्लीन पाये जाते हैं। दिल्ली के मि० माधवाचार्य व दीनानाथ जी आदि ऐसे लोगों में अग्रगण्य हैं। मि० दीनानाथ जी का 'सनातन धर्मालोक' नाम की ग्रन्थमाला ही इस उद्देश्य से प्रकाशित हो रही है। नियोगज माधवाचार्य जी तो साक्षात् स्वयं माधव (माँ=अपनी माता के, धव=खसम) बने हुए हैं। उनका तो पेशा ही आर्यसमाज, व ऋषि को गालियाँ देना रह गया है। शास्त्री जी ने विशेष रूप से गालियाँ देने के लिए एक अखबार 'लोकालोक' निकाल रखा है जिसमें यह दिल के फफोले फोड़ा करता है। इन दोनों के अतिरिक्त छोटे-मोटे कई तीसमारखाँ पण्डित और भी हैं जो हमारे व आर्यसमाज के विरुद्ध निरन्तर लेखनी व वाणी से विष उगला करते हैं। इस प्रकार लगभग ३०० पुस्तकें आर्यसमाज के विरुद्ध छप चुकी हैं व निरन्तर नयी छप रही हैं। हमने जब इन पोपों का उत्तर देना प्रारम्भ किया तो इन लोगों ने कई गाली-गलोज से पूर्ण पुस्तकें छाप डाली हैं। इनके अखबारों में हमारे विरुद्ध अपशब्दों से युक्त विषैले लेख छप रहे हैं।

हमारी इच्छा है कि पुराणों की अवैदिकता पर पौराणिक विद्वानों के साथ लेखबद्ध रूप से खुलकर एक शास्त्रार्थ हो जावे तो हम इनकी अनर्गल मान्यताओं की सारी कलई खोलकर रख देवें। पर पौराणिक विद्वान् सामने आने का साहस नहीं रखते हैं। हमारा दावा है कि १८ पुराण व्यासकृत नहीं हैं। उनमें ऐसी-ऐसी अनर्गल बातें भरी पड़ी हैं कि उन्हें देखकर लज्जा आती है। महाभारत व पुराणों में जो लाखों श्लोक बुद्धि, वेद सृष्टिनियम तथा इतिहास के विरुद्ध भरे पड़े हैं जिसमें हमारे धर्म, हमारी संस्कृति हमारे पूर्वज ऋषि मुनियों को भयंकर कलंक लगाए गए हैं। उनको इन ग्रन्थों में से निकाल देना चाहिए। जब तक ऐसा नहीं किया जावेगा हमारे समाज व हमारे धर्म पर से कलंक नहीं मिटेगा। परन्तु पौराणिक अन्धविश्वासी एवं जिद्दी विद्वान् हमारी बात से सहमत नहीं हैं और हमारे ऐसा लिखने पर हम

Scanned by CamScanner

को अपशब्दों से याद करते हैं। जैसा कि हमारे विरुद्ध प्रकाशित पुस्तकों व लेखों में देखा जा सकता है।

हमने इस पुस्तक में कुछ पुराणादि मान्य ग्रन्थों के प्रमाण देकर नमूने के तौर पर यह दिखाने का यत्न किया है कि ऐसी ही अनर्गल सैकड़ों ही नहीं हजारों बातें इन ग्रन्थों में भरी पड़ी हैं, जिनको सत्य नहीं माना जा सकता है। ऐसी बातें किसी धर्म ग्रन्थ के स्थान पर किसी कूड़ेदान की ही शोभा बढ़ा सकती हैं। विज्ञ पाठक इन चन्द बातों से अनुमान लगा सकेंगे कि हमारे विपक्षी पौराणिक विद्वानों में क्या सामर्थ्य है जो वे आर्यसमाज के साथ शास्त्रार्थ के लिए मैदान में उतर सकें। क्या इन मूर्खता पूर्ण बातों का दुनिया में कोई समर्थन कर सकता है? यदि दम हो तो कोई भी हमारे विपक्षी विद्वान् सामने आकर इन गल्पों का मण्डन करके दिखावें। यह पुस्तक हमने गाली-गलौज दक्ष, उन पौराणिक पण्डितों का मुखमर्दन करने के लिए लिखी है जो जगह-जगह जाकर हमारे व आर्यसमाज के विरुद्ध विष-वमन किया करते हैं। हमारे विरुद्ध पौराणिक विद्वान् समाचार पत्रों में लेख व पुस्तकें असभ्य भाषा में प्रकाशित करते हैं तथा जनता में आर्यसमाज की मान्यताओं के विरुद्ध भ्रम पैदा करने के लिए स्थायी चैलेञ्ज की घोषणा मौखिक रूप से करते तथा तत्सम्बन्धी परचे छपवाकर बँटवाते फिरते हैं।

आशा है हमारी इस पुस्तक को हाथ में लेकर व हमारी खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला की अन्य पुस्तकों के आधार पर आर्यजन ऐसे कुतर्की पौराणिक विद्वानों को शास्त्रार्थ समर में नीचा दिखा सकेंगे व जनता को यह समझा सकेंगे कि मिथ्या बातों से पूर्ण पौराणिक मत व आर्यसमाज की वैदिक मान्यताओं में क्यों व क्या अन्तर है।

निवेदक

—डॉ० श्रीराम आर्य

Scanned by CamScanner

सनातन धर्म का कूड़ेदान

माँ, बहिन, भाई व बेटी से विवाह की आज्ञा

या तु ज्ञानमयी नारी वृणेद्यं पुरुषं शुभम्।
कोऽपि पुत्रः पिता भ्राता स च तस्याः पतिर्भवेत्॥ २६॥
स्वकीयां च सुतां ब्रह्मा विष्णुदेवः स्वमातरम्।
भगिनीं भगवाञ्छम्भुर्गृहीत्वा श्रेष्ठतामगात्॥ २७॥
इति श्रुत्वा वेदमयं वाक्यं चादितिसम्भवः।
विवस्वान् भ्रातृजां गृहीत्वा श्रेष्ठवानभूत्॥ २८॥

—(भविष्यपुराण (बम्बई छापा) प्रतिसर्ग ख० ४। अ० १८)

अर्थ—जो ज्ञान वाली (पढ़ी लिखी पौराणिक) स्त्री हो वह चाहे किसी भी शुभ पुरुष को वर ले। वह चाहे उसका पुत्र, पिता व भाई कोई क्यों न लगता हो, वही उसका पति बन जाता है। ब्रह्माजी ने अपनी पुत्री को, विष्णुजी ने अपनी माँ को तथा महादेवजी ने अपनी बहिन को पत्नी ग्रहण करके श्रेष्ठता प्राप्त की और इस ज्ञान की बात को सुनकर सूर्य भगवान् ने अपनी भतीजी से विवाह करके श्रेष्ठता को प्राप्त किया।

समीक्षा—सनातन धर्म की उपरोक्त प्रथा चाहे आजकल के आर्यसमाज विरोधी पौराणिक पण्डितों एवं उनके भक्तों में भले ही आदर्श रूप में चालू हो और चाहे वे इसके अनुसार अपने परिवार में माँ, बहिन, बेटी आदि से विवाह करके अपने को परम श्रेष्ठ समझते हों, पर दुनिया तो इस गन्दी प्रथा के मानने वालों पर सौ-सौ बार थूकेगी। ऐसी गन्दी प्रथा तो जंगली लोगों में भी नहीं है। यदि यही सनातन धर्म है तो फिर नीच व पिशाचों का धर्म कौन-सा होगा? क्या सनातनी देवता इतने पतित थे कि उन्होंने अपनी बेटी, बहिन, माँ व भतीजी को भी नहीं छोड़ा? यदि ऐसे कुकर्मी भी देवता माने जा सकते हैं तो फिर उनमें और राक्षसों में भेद क्या होगा?

हमारी दृष्टि में तो यह पौराणिक गप्पाष्टक है। और यदि सनातनी विद्वान् इसे सही मानते हैं, तो स्पष्ट रूप से यह पौराणिक कूड़ेदान की एक भयंकर गन्दगी है, जिसकी दुर्गन्ध के कारण सनातन धर्म से लोग घृणा करते हैं। यदि पौराणिक जनता अब भी अपने यहाँ इस चालू गन्दी प्रथा को बन्द कर देवे तो उत्तम होगा।

Scanned by CamScanner

विचित्र मुखाधान

तत्र स्थिता प्रिया संज्ञा वडवारूपधारिणी॥ ३७॥

—(भवि० प्रतिसर्ग खं० ४ अ० १८)

अश्वरूपेण मार्तण्डस्तां मुखेन समासदत्॥ ५५॥
सा तं विवस्वतः शुक्रं नासाभ्यां समधारयत्।
देवौ तस्यामजायेतामश्विनौ भिषाजौ वरौ॥ ५६॥

—(भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व अ० ७९)

नोट—यही कथा शिवपुराण उमा संहिता अ० ३५ तथा मत्स्य-पुराण अ० ११ में भी विस्तार से दी है।

अर्थ—वहाँ प्रिया संज्ञा घोड़ी रूप धारण किए खड़ी थी। सूर्य भगवान् भी घोड़े का रूप धरके मुख में मैथुन को प्रवृत्त हुए। उस संज्ञा ने सूर्य के वीर्य को नाक में होकर ग्रहण किया। उससे वैद्यों में श्रेष्ठ अश्विनीकुमार नाम के दो देवता पैदा हुए जिनके नाम नासत्य और दस्र थे।

समीक्षा—सनातनी लोग जिन भगवान् सूर्य को नित्य जल चढ़ाते व उपासना करते हैं, यह उनके चरित्र का नमूना है हम नहीं कह सकते हैं कि हमारे विपक्षी पौराणिक विद्वान् अपने देवता के इस पवित्र कर्म का अपनी गृहस्थी में कहाँ तक अनुकरण करते हैं। यदि वे करते हैं तो हमारी प्रार्थना है कि वे इस पापकर्म को त्याग देवें अन्यथा यह गन्दी प्रथा भी कहीं सनातन धर्म में सर्वत्र चालू न हो जावे, इसकी कोई गारण्टी नहीं होगी। सुना है कि दिल्ली के माधवाचार्यजी व गाजियाबाद के खौमचाफर्रोश कोई यक्ताजी इस स्वानुभूत प्रथा के परम भक्त व प्रचारक थे। वे अपने देवता के इस कर्म को अपने सहधर्मियों के लिए अनुकरणीय एवं पवित्र कर्म तथा साक्षात् सनातन धर्म मानते थे अब वे भी इससे घृणा करने लगे हैं। सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जावे तो भूला नहीं कहलाता है। अतः हम उन्हें बधाई देते हैं यदि वे अपने पूज्य गुरुदेव मि० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत नृत्य, गायन, वादनाचार्य को भी इस पौराणिक कर्म से विरत कर सकें तो और भी उत्तम होगा। आशा है यक्ताजी कोशिश करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे।

हमारी दृष्टि में तो यह पौराणिक गप्प है। न कभी सूर्य ने ऐसा पापकर्म किया होगा और न यह सम्भव भी है कि मुँह में विषयभोग करके नाक में वीर्याधान किया जावे और फिर इस विलक्षण पौराणिक गर्भाधान से

Scanned by CamScanner

दो देवता अश्विनीकुमार पैदा हो जायें। क्या देवताओं की पैदायश का यही बेहूदा सनातनी तरीका रह गया है। क्या जो ऐसे बेतुके तरीके से पैदा हो पड़े वह देवता भी बन जाता है। हम तो इस गप्प को भी पौराणिक कूड़ेदान भण्डार में एक गन्दगी ही मानते हैं चाहे हमारे विपक्षी सनातनी विद्वान् इसे कितना भी उत्तम व अपने लिए अनुकरणीय मानते हों। ये गन्दी बातें सनातन धर्म पर कलंक हैं।

पापमोचन का नुस्खा

स्तेनः सुरापो मित्रध्रुग् ब्रह्महा गुरुतल्पगः।
स्त्री-राज-पितृ-गोहन्ता येच पातकिनोऽपरे॥ ९॥
सर्वेषामप्यघवतामिदमेव सुनिष्कृतम्।
नामव्याहरणं विष्णोर्य्यतस्तद्विषया मतिः॥ १०॥

—(भागवत स्क० ६। अ० २)

अर्थ—चोर, डाकू, शराबी लोग, मित्रों के साथ घात करने वाले (पौराणिक) ब्राह्मणों का कत्ल करने वाले (ब्रह्महत्यारे) गुरुपत्नीगामी, राजा और गौओं को मारने वाले तथा अन्य सभी प्रकार के पाप करने वालों के पापों का विनाश विष्णु के नामोच्चारण मात्र से हो जाता है।

समीक्षा—पापों से मुक्त होने का यह नुस्खा भागवतकार ने इसलिए बताया था कि सारे ही दुष्ट, धूर्त एवं महापापी लोग वैष्णव सम्प्रदाय में शामिल हो जावें। और इस नुस्खे के प्रचार का प्रभाव भी यही हुआ कि सारे चोर ठग, लबार व नम्बरी बदमाश लोग भी धर्म के नाम पर सनातन धर्म में घुसे हुए आज पक्के वैष्णव बने ऊर्ध्व-पुण्ड्र (तिलक) लगाए जनता को लूटते खाते-फिरते हैं और सनातन धर्म की शोभा बढ़ा रहे हैं। यदि किसी को हमारी बात पर विश्वास न हो तो अधिकांश एक सौ ग्यारह नम्बर का तिलक (१११) लगाने वालों के व्यक्तिगत जीवन की खोज करके कोई भी देख लें।

ब्रह्माजी का गौ से मैथुन करना

या रूपार्द्धवती पत्नी ब्रह्मणः कामरूपिणी॥ ३४॥
सुरभिः सा हिता भूत्वा ब्रह्माणं समुपस्थिता।
ततस्तामगमद् ब्रह्मा मैथुनं लोकपूजितः॥ ३५॥
लोकसर्जनहेतुज्ञो गवामर्थाय सत्तमः।
जज्ञिरे च सुतास्तस्यां विपुला धूमसन्निभाः॥ ३६॥

—(मत्स्यपुराण अ० १७१)

Scanned by CamScanner

अर्थ—रूपवती नाम की जो ब्रह्माजी की पत्नी है वह सुरभि गौ का रूप धारण करके ब्रह्मा के समीप में खड़ी हो गई। तब लोकों में पूजित हुए ब्रह्माजी संसार के निमित्त गौओं के उपकारार्थ उस गाय से मैथुन करते भये। फिर उस गाय से धूम्र वर्ण वाले बहुत से पुत्र उत्पन्न हुए।

समीक्षा—पशु मैथुन की कथा फर्जी पौराणिक देवताओं की विशेषता रही है। सूर्य का घोड़ी से मुख मैथुन एवं ब्रह्माजी का गौ से मैथुन करना इस प्रथा के ज्वलन्त उदाहरण हैं। हम निश्चय पूर्वक नहीं कह सकते हैं कि हमें कोसने वाले हमारे विपक्षी पौराणिक विद्वानों में अब भी यह प्रथा जारी है या नहीं। कभी-कभी पशुओं के मनुष्यों की आकृति के बच्चे पैदा हो जाते हैं इससे अनुमान होता है कि सनातनी विद्वानों में इस प्रथा का अभी भी पूर्णतः अभाव नहीं हुआ है और ऐसे पशु बच्चे भी कदाचित् उन्हीं की कृपा का प्रसाद होते हैं।

हमारे विचार से यह बेहूदी प्रथा सनातनी कूड़ेदान की गन्दगी का ही एक हिस्सा है आशा है हमारे विपक्षी विद्वान् इस पशु-मैथुन की सनातनी प्रथा के औचित्य पर अवश्य प्रकाश डालने की कृपा करेंगे ताकि उनके इस विषय में भिन्न-भिन्न पशुओं पर स्वानुभूत प्रयोगों के गुण दोषों पर संसार के कामशास्त्री लोग विचार कर सकें।

शिखण्डी शिवजी

एवं सिसृक्षुर्भूतानि ददर्श प्रथमं विभुः।
पितामहोऽब्रवीच्चैनं भूतानि सृज माचिरम्॥ १०॥
हरिकेशस्तथेत्युक्त्वा भूतानां दोषदर्शिवान्।
दीर्घकालं तपस्तेपे मग्नोऽम्भसि महातपाः॥ ११॥

अर्थ—प्रभावशाली ब्रह्मा ने प्राणियों की सृष्टि करने की इच्छा से सब से पहले महादेवजी को देखा। तब ब्रह्मा ने उनसे कहा, प्रभो! अब अविलम्ब सम्पूर्ण भूतों की सृष्टि कीजिये। यह सुनकर महादेवजी 'तथास्तु' कहकर भूतगणों के दोष देखकर जल में मग्न हो गये, और महान् तप का आश्रय लेकर दीर्घकाल तक तपस्या करते रहे।

स महान्तं ततः कालं प्रतीक्ष्यैनं पितामहः।
स्त्रष्टारं सर्वभूतानां ससर्ज मनसा परम्॥ १२॥
सोऽब्रवीत् पितरं दृष्ट्वा गिरीशं सुप्तमम्भसि।
यदि मे नाग्रजोऽस्तम्यस्ततः स्त्रक्ष्याम्यहं प्रजाः॥ १३॥
तमब्रवीत् पिता नास्ति त्वदन्यः पुरुषोऽग्रजः।
स्थाणुरेष जले मग्नो विश्रब्धः कुरु वै कृतम्॥ १४॥

Scanned by CamScanner

उधर पितामह ब्रह्मा ने सुदीर्घ काल तक उनकी प्रतीक्षा करके अपने मानसिक संकल्प से दूसरे सर्वभूत स्रष्टा को उत्पन्न किया। उस स्रष्टा ने महादेव को जल में सोया देख अपने पिता ब्रह्माजी से कहा, यदि दूसरा कोई मुझसे ज्येष्ठ न हो तो मैं प्रजा की सृष्टि करूँगा। यह सुनकर ब्रह्माजी ने कहा, तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा अग्रज नहीं है। ये शिव हैं भी तो पानी में डूबे हुए। अतः तुम निश्चिन्त होकर सृष्टि का कार्य आरम्भ करो (तब स्रष्टा ने प्रजा की सृष्टि की)।

भूतग्रामे विवृद्धेन तुष्टे लोकगुरावपि।
उदतिष्ठज्जलाज्ज्येष्ठः प्रजाश्चेमां ददर्श सः॥ २०॥
बहुरूपा प्रजाः सृष्टा विवृद्धाश्च स्वतेजसा।
चुक्रोध भगवान् रुद्धो लिङ्गं स्वं चाप्यविध्यत॥ २१॥
ततः प्रवृद्धिं तथा भूमौ तथैव प्रत्यतिष्ठत।
तमुवाचाऽव्ययो ब्रह्मा वचोभिः शमयन्निव॥ २२॥
किं कृतं सलिले शर्व चिरकालस्थितेन ते।
किमर्थं चेदमुत्पाद्य लिङ्गं भूमौ प्रवेशितम्॥ २३॥

जब प्राणी समुदाय की भली प्रकार वृद्धि हो गई और लोक गुरु ब्रह्माजी भी सन्तुष्ट हो गये तब वे ज्येष्ठ पुरुष शिवजी जल से बाहर निकले। निकलने पर उन्होंने इन समस्त प्रजाओं को देखा, अनेक रूप वाली प्रजा की सृष्टि हो गई और वह अपने ही तेज से भली-भाँति बढ़ भी गई। यह देखकर शिवजी कुपित हो उठे और उन्होंने अपना लिङ्ग काटकर फेंक दिया। इस प्रकार भूमि पर डाला गया लिङ्ग उसी रूप में प्रतिष्ठित हो गया। तब अविनाशी ब्रह्मा ने अपने वचनों द्वारा उन्हें शान्त करते हुए कहा! रुद्रदेव आपने दीर्घकाल तक जल में रहकर कौन-सा कार्य किया है और इस लिङ्ग को उत्पन्न करके किसलिए पृथ्वी पर डाल दिया है।

सोऽब्रवीज्जातसंरम्भस्तथा लोकगुरुंगुरुम्।
प्रजाः स्रष्टाः परेणेमाः किं करिष्याम्यनेन वै॥ २४॥

—(महाभारत सौप्तिक पर्व अ० ३७)

यह सुनकर कुपित हुए जगद्गुरु शिव ने ब्रह्माजी से कहा प्रजा की सृष्टि तो दूसरे ने कर डाली फिर इस लिङ्ग को रखकर मैं क्या करूँगा।

समीक्षा—शिवजी ने अपनी उपस्थेन्द्रिय को काटकर फेंक दिया, यह ठीक ही किया। आखिर वे उसको रखकर करते भी क्या? उस अंग का मुख्य कार्य सन्तान पैदा करना ही होता है। जब सन्तान दूसरे व्यक्ति ने पैदा कर दी तो फिर शिवजी उसे निरर्थक रूप से धारण करके क्या करते?

Scanned by CamScanner

उन्होंने क्रोध प्रकट करने का उपाय भी विलक्षण ही सोचा था। कटा हुआ वह लिङ्ग पृथ्वी पर स्थापित हो गया। सनातनी जिस लिङ्ग की पूजा करते हैं शिवजी का कटा हुआ यह वही उपस्थेन्द्रिय है जो सन्तान पैदा करने के काम आता है।

लिङ्गहीन हो जाने से ही पुराणों में शिवजी को शिखण्डी* लिखा गया है जो ठीक ही है शिखण्डी की उपासना करने से भक्तों में शिखण्डीपन आना ही चाहिये। हमारे विपक्षी पौराणिक विद्वानों में इसलिए यह गुण विशेष रूप से दिखाई देता है। हमारा परामर्श है कि वे यदि शिखण्डी की भक्ति छोड़कर अपना इलाज दिल्ली की माधवाचार्य, प्रेमाचार्य, वीराचार्य एण्ड कम्पनी में करा लेवें तो उत्तम होगा।

शिवजी की उपस्थेन्द्रिय पर आफतें आती रही हैं। एक बार तो ऊपर की कथा में उसे शिवजी ने गुस्से में आकर काट कर फेंक दिया था। शिवजी ने बमुश्किल छिपकली की पूँछ की तरह फिर उसे बढ़ा पाया होगा तो दारुवन में भृगु ऋषि ने शाप देकर उसे काट डाला (देखो हमारी पुस्तक शिवलिङ्ग पूजा क्यों?) शिवजी के सामने हमेशा यही परेशानी रही कि उन्हें सदैव बिना उसके शिखण्डी ही रहना पड़ा और भक्तों को उसकी पृथक् कटे हुए रूप में ही सदैव पूजा करनी पड़ी। वरना कितना उत्तम होता कि कोई पौराणिक सर्जन उसे शिवजी के शरीर में जोड़ देता तो भक्त लोग उसकी व शिवजी की (दोनों की) एक साथ पूजा कर लिया करते।

कुछ भी हो हमारे विचार से यह भी पौराणिक गपोड़ा ही है, न तो सृष्टि की रचना इस प्रकार से हुई थी न शिवजी ने अपना वह अंग काटा होगा। गप्पी सूत लोगों ने यह झूठी कथा गढ़कर महाभारत में घुसेड़ दी है। इस से शिवजी के चरित्र पर एक कलंक लगता है। यदि इस गप्पाष्टक को सत्य माना जावेगा तो देश में सनातनी कूड़ेदान की एक गन्दगी के रूप में यह कथा भी दुर्गन्ध फैलाती रहेगी।

देवताओं को गर्भ रह गया

योऽयं देवाधिदेवेशः कपर्दी नीललोहितः।
तस्य रेतः सुराः पीत्वा सगर्भा विष्णुना सह॥ ३६॥

—(सौर पुराण अं० ५३)

---

* तथैव मारुते पत्रे शिखण्डीशं समर्चयेत्॥ ९॥

—(शिव पु० वायु स० अ० ३०)

अर्थ—मारुत पत्रों से शिखण्डी (हिजड़ों के सरदार) शिवजी की पूजा करें। लोकभाषा में शिखण्डी का अर्थ हिजड़ा होता है।

Scanned by CamScanner

अर्थ—देवों के देव महादेव जी के वीर्य को पीने से विष्णु के साथ अन्य देवताओं को गर्भ रह गया।

समीक्षा—हम तो सुना करते थे कि देवियों के ही गर्भाधान हुआ करता है, पर आज पता चला है कि शिवजी ने विष्णु आदि देवताओं के शरीर में मुखमार्ग से गर्भाधान कर दिया। उसका तरीका भी विलक्षण रहा। शिवजी का शुक्रपात हुआ और देवता लोग जिनमें विष्णु भी सम्मिलित थे उसे जायके से पी गये और उसी से उनके गर्भ रह गये। मुँह द्वारा गर्भाधान हो सकता है इस पर पौराणिक वैज्ञानिकों को परीक्षण करना चाहिए। हमारे विचार से यह भी पौराणिक गप्पाष्टक है। शिवजी के गर्भाधान करने व देवताओं के वीर्य पीने की वाममार्गीय प्रथा सनातनी कूड़ेदान का विशेष अंग है। ऐसी बेहूदी बातों से इस पौराणिक धर्म की संसार में बदनामी होती है। इन बातों पर सनातनी विद्वान् ही विश्वास कर सकते हैं।

कान में गर्भाशय

अथ चिन्तयतस्तस्य कर्णाभ्यां पुरुषः स्मृतः।
प्रजासर्गकरो ब्रह्मा तमुवाच जगत्पतिः॥ २७॥

—(महाभारत शान्तिपर्व अ० ३४८)

अर्थ—चिन्तन करते समय नारायण के कानों में से एक पुरुष पैदा हुआ। वही प्रजा की सृष्टि करने वाला ब्रह्मा हुआ।

कर्णं स्त्रोतोद्भवं चापि मधु नाम महासुरम्॥ १४॥

—(महाभीष्म पर्व अ० ६७)

अर्थ—नारायण के कान में से मधु नाम का महान् राक्षस पैदा हुआ।

समीक्षा—नारायण के कान में क्या कोई गर्भाशय की फैक्ट्री चालू थी? जो उसमें से चार मुँह वाले ब्रह्माजी व मधु नाम का राक्षस पैदा हो गये थे। क्या उस समय देवियों का अभाव हो गया था? जो मर्दों के शरीर में से सन्तानें पैदा होती थीं। यह भी एक विलक्षण गप्प है कि कान से बच्चे पैदा होते थे।

ब्रह्मा की विचित्र उत्पत्ति

सृष्टिकर्ता स वै ब्रह्मा लिङ्गेन्द्रियसमुद्भवः॥ १०८॥

—(भविष्य पु० प्रतिसर्ग सं० ४। अ० २५)

अर्थ—सृष्टि बनाने वाले (पौराणिक चतुर्मुखी) ब्रह्मा जी लिङ्गेन्द्रिय में से पैदा हुए थे।

समीक्षा—महाभारत में लिखा है कि ब्रह्मा जी नारायण के कान में से पैदा हुए थे और भविष्यपुराण लिखता है कि वे लिङ्गेन्द्रिय में से निकले थे।

Scanned by CamScanner

दोनों में से कौन-सी गप्प को ठीक माना जावे, यह पौराणिक विद्वान् कृपया स्पष्ट कर देवें। हमारी दृष्टि में तो सनातन धर्म के ग्रन्थ ऐसी ही गप्पों का भण्डार हैं जिनका न सर है न पैर।

सुन्दर औलाद बनाने का विचित्र विधान

पुनश्चैनामलङ्कृत्य ऋषये प्रत्यपादयत्।
तां सा दीर्घतमा देवीं तथा कृतवती तदा॥ ६८॥
दध्ना लवणमिश्रेण स्वशक्तम्मधुकेन तु।
लिह मामजुगुप्सन्ती आपादतलमस्तकम्।
ततस्त्वं प्राप्स्यसि देवि पुत्रान्वै मनसेप्सितान्॥ ६९॥
तस्य सा तद्वचो देवी सर्वं कृतवती तदा।
तस्य सा पानमासाद्य देवी परिहरत्तदा॥ ७०॥
तमुवाच ततः सोऽथ यत्ते परिहृतं शुभे।
विना पानं कुमारन्तु जनयिष्यसि पूर्वजम्॥ ७१॥

सुदेष्णा बोली—

नार्हसि त्वं महाभाग पुत्रं मे दातुमीदृशम्।
तोषितश्च यथाशक्त्या प्रसादं कुरु मे प्रभो॥ ७२॥

दीर्घतमा बोला—

तवापचाराद्देव्येष नान्यथा भविता शुभे।
नैव दास्यति पुत्रस्ते पौत्रो वै दास्यते फलम्॥ ७३॥
तस्या पानं विना चैव योग्यभावो भविष्यति।
तस्माद्दीर्घतमाङ्गेषु कुक्षौ स्पृष्ट्वेदमब्रवीत्॥ ७४॥
प्राशितं यद्यदग्रेषु न मोपस्थं शुचिस्मिते।
तेन तिष्ठन्ति ते गर्भे पौर्णमास्यामिवोडुराट्॥ ७५॥
तदंशस्तु सुदेष्णाया ज्येष्ठः पुत्रो व्यजायत।
अगात् तथा लिङ्गश्च पुण्ड्रः सुह्मस्तथैव च॥ ७६॥

—(मत्स्यपुराण अ० ४८)

अर्थ—राजा बलि ने अपनी रानी सुदेष्णा को दीर्घतमा से औलाद पैदा कराने को भेजा। वह शृंगार करके ऋषि के पास गई दीर्घतमा ने कहा कि मेरे सारे शरीर पर दही, नमक तथा शहद लगाकर लज्जा को त्याग कर पैरों से लेकर मस्तक तक जीभ से चाट। हे देवि! इसके करने से तू वाञ्छित

Scanned by CamScanner

पुत्रों को पावेगी ॥ ६८-६९ ॥ रानी ने वैसा ही किया परन्तु जब सब अंग चाटती हुई गुदा के पास आई तब गुदा को छोड़ दिया ॥ ७० ॥ ऋषि ने कहा हे शुभे ! जो तूने गुदा को त्याग दिया है इसलिये तेरा बड़ा पुत्र गुदा से रहित होगा ॥ ७१ ॥ यह सुनकर रानी ने कहा कि हे महाभाग ! ऐसा पुत्र आप देने योग्य नहीं हो । हे प्रभो ! आप मेरे प्रसन्न करने से मेरे पर कृपा कीजिये ॥ ७२ ॥ दीर्घतमा बोला देवि ! तेरे अपराध से तो ऐसा ही प्रतीत होगा, पुत्र तुझे कुछ फल नहीं देगा । पोता देगा ॥ ७३ ॥ और उसके बिना गुदा के ही योग्य भाव हो जायेगा । फिर उस ऋषि ने रानी के अंगों में से कुक्षि को स्पर्श करके यह वचन बोला ॥ ७४ ॥ हे सुन्दर हास्य वाली ! तूने (मेरी) उपस्थेन्द्रिय को खूब चाटा है, इसलिए तेरा ऐसा गर्भ होगा जैसा पूर्णमासी का चन्द्रमा होता है ॥ ७५ ॥

समीक्षा—हमारे विपक्षी कट्टर पौराणिक विद्वानों के परिवारों में कदाचित् आजकल भी यह सन्तानोत्पत्ति की विलक्षण विधि चालू होवे तो किसी आर्यसमाजी को आश्चर्य नहीं करना चाहिये । सनातनी नुस्खे भी गर्भाधान के विलक्षण होते हैं पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान सुन्दर बालक को जन्म देने के लिए सनातन धर्म में उपस्थेन्द्रिय को चाटने का उपरोक्त विधान कितना घृणास्पद है यह देखकर प्रत्येक को दुःख होगा । वास्तव में यह कथा भी सनातनी कूड़ेदान की गन्दगी का एक नमूना है जो पौराणिक गन्दी परम्परा को प्रकट करती है ।

सनातन धर्म का सुन्दर भोजन

शिवदूती बोली—

आसां कृतं देहि भोज्यं दुर्लभं यत्त्रिविष्टपे ।
स्नेहाक्तं सगुडह्रद्यं सुपक्वं परिकल्पितम् ॥ १२१ ॥
क्वचिन्नान्येन यद्भुक्तमपूर्वं परमेश्वर ॥ १२२ ॥

शिव ने कहा—

मया वै साधितं चान्नं प्रकारैर्बहुभिः कृतम् ॥ १२३ ॥
तत्सर्वं च व्ययं यातं न चान्यदिह दृश्यते ।
भवतीष्वागतास्वद्य किं मया देयमुच्यताम् ॥ १२४ ॥
अपूर्वं भवतीनां यन्मया देयं विशेषतः ।
आस्वादितं न चान्येन भक्षणार्थे च ददाम्यहम् ॥ १२५ ॥
अधोभागे च मे नाभेर्वर्तुलौ फलसन्निभौ ।
भक्षयध्वं हि सहितालम्बौ मे वृषणाविमौ ॥ १२६ ॥

Scanned by CamScanner

अनेन चाप्यभोज्येन परा तृप्तिर्भविष्यति।

पुलस्त्य बोले—

महाप्रसादं तां लब्ध्वा देव्यस्सर्वास्तदा शिवम्॥ १२७॥
प्रणिपत्य स्थिताश्शर्वं इदं वचनमब्रवीत्।
करिष्यन्ति शुभचारान्विना हास्येन ये नराः॥ १२८॥
तेषां धनं पशुः पुत्रा दाराश्चैव गृहादिकम्।
भविष्यति मया दत्तं यच्चान्यन्मनसि स्थितम्॥ १२९॥
हास्येन दीर्घदशना दरिद्राश्च भवन्ति ते।
तस्मान्न निन्दा हास्यं च कर्तव्यं हि विजानता॥ १३०॥
चणकान्पूरिकाश्चैव वृषणैः सह पूपकान्।
बन्धुभिः स्वजनैश्चैव तेषां वंशो न छिद्यते॥ १३१॥
अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम्।
रूपवान्सुभगो भोगी सर्वशास्त्रविशारदः॥ १३२॥

—(पद्मपुराण सृष्टि खं० अ० ३१ कलकत्ता)

भावार्थ—शिवदूती ने शिवजी से कहा कि आप मुझे ऐसा भोजन देवें जो रसयुक्त, मीठा, दिल को ताकत देने वाला व अच्छे प्रकार का पका हुआ हो और तिब्बत पर भी दुर्लभ न होवे। साथ ही जिसको कभी मुझ से पहले किसी ने न खाया हो। तो शिवजी ने कहा कि मैंने बहुत प्रकार की भोजन सामग्री तैयार कराई थी, वह तो समाप्त हो चुकी है, उसमें से जरा-सी भी शेष नहीं बची है। तुम अब (देर करके) आई हो बताओ मैं अब तुम को क्या दूँ जिससे तुम्हारी तृप्ति हो सके? लो मैं तुम को खाने की ऐसी चीज देता हूँ जिसका इससे पूर्व किसी ने स्वाद नहीं लिया है। मेरे अधोभाग में नाभि के नीचे दो गोल फल हैं, तुम मेरे लम्बे के सहित दोनों वृषण (अण्डकोषों) को खा लो। इनका भोजन कर लेने से तुम्हारी पूर्ण तृप्ति हो जावेगी। पुलस्त्य जी ने कहा शिवदूती ने शिवजी के इस महाप्रसाद को पा लिया। शिवजी ने कहा कि जो (पौराणिक) लोग बिना हास्य (मजाक) किये इसका शुभ आचरण करेंगे उनको धन, पुत्र, स्त्री, मकानादि सम्पत्ति में ये सब कुछ प्राप्त हुआ करेगा। और जो लोग इस (पवित्र) भोजन का मजाक उड़ावेंगे, उनके दांत लम्बे-लम्बे हो जावेंगे, वे दरिद्री हो जावेंगे। इसलिए इस शुभ कर्म की मजाक नहीं उड़ानी चाहिये। अण्डकोषों को चनों के साथ भरकर पुए बनाकर खाने वालों के भाई बन्धु और स्वजनों का

Scanned by CamScanner

वंश नाश नहीं होता है। इससे बिना पुत्र वालों को पुत्र मिलते हैं, गरीबों को धन मिलता है, वह सुन्दर, रूपवान् एवं उत्तम भोगों को भोगने वाला और सब शास्त्रों का जानने वाला पारंगत विद्वान् बन जाता है।

समीक्षा—शिवजी की सूझ बड़ी विलक्षण थी। उन्होंने एक स्त्री को जो वाममार्गीय खुराक खिलाई यह सनातन धर्म पर कलंक है। किसी स्त्री के भोजन माँगने पर उसे ऐसी बात कहना पौराणिक सभ्यता को प्रकट करता है। शिवजी को यह भय भी था कि कहीं लोग उनकी इस बात की मजाक न उड़ावें इसलिए उन्होंने हास्य करने वालों को भय दिखाने को शाप भी दे दिया है। पुरुषों के अण्डकोषों को खाने से लाभ व सेवन की विधि भी बता दी है कि उनको भूनकर चनों के साथ पुए बनाकर खाने से कितने लाभ होते हैं। हमारे जिन विपक्षी पौराणिक विद्वानों ने इस भोजन को खाकर स्वयं परीक्षाएँ की हों वे अपने सही अनुभव कृपया प्रकाशित कर देवें, यह हमारा उनसे निवेदन है। ताकि लोग यह देख सकें कि उनको जो पुत्र धन व खूबसूरती मिली है क्या वह इसी भोजन के प्रताप से मिली है। अथवा यह नुस्खा पुराणकार ने झूठा लिखकर पौराणिक जनता को बेवकूफ बनाया है।

हमारी दृष्टि में तो किसी वाममार्गीय या मुसलमान मतावलम्बी ने यह कथा गढ़कर पुराण में घुसेड़कर शिवजी को कलंकित किया है। और यदि पौराणिक विद्वान् इस कथा को सत्य मानते हैं। तो सचमुच यह सनातनी कूड़ेदान की भयंकर गन्दगी है जिसकी दुर्गन्ध से पुराणों को देखने वाले अन्य लोग भी परेशान हैं।

विष्णु का व्यभिचार व अन्यों को प्रेरणा

एतस्मिन्नन्तरे विष्णुर्दर्शामृतसम्भवाः।
कान्ताः पूर्णेन्दुवदना दिव्यलावण्यगर्विताः॥ ४५॥
सम्मोहितः कामबाणैर्ले भे तत्रैव निर्वृत्तिम्।
ताभिश्च वरनारीभिः क्रीडमानो बभूव ह॥ ४६॥

अर्थ—उसी अवसर में विष्णु ने अमृत से उत्पन्न हुई पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली दिव्य सौन्दर्य से गर्वित स्त्रियों को देखा॥ ४५॥ काम के बाणों से मोहित (घायल) हुए विष्णु ने उन स्त्रियों के साथ क्रीड़ा विहार कर निवृत्ति प्राप्त की॥ ४६॥

ताभ्यः पुत्रानजनयद् विष्णुर्वरपराक्रमान्॥ ४७॥

—(शिव पु० श० रु० सं० अ० २२)

उन स्त्रियों से विष्णु ने बड़े पराक्रमी पुत्रों को उत्पन्न किया।

Scanned by CamScanner

सर्वं देववरा यूयं मद्वाक्यं शृणुतादरात्।
कर्तव्यन्तत्तथा शीघ्रं ततश्शं वो भविष्यति॥ २९॥
दिव्या वराङ्गनास्सन्ति पाताले यौवनान्विताः।
ताभिः सार्द्धं महाक्रीडां कामयेद्यः करोतु सः॥ ३०॥

—(शिव पु० श० रु० सं० अ० २३)

विष्णु बोले--देवताओ! आदर से मेरी बात को सुनो व उसी प्रकार शीघ्रता से करो तो तुम्हारा कल्याण होगा॥ २९॥ पाताल लोक में यौवन से उन्मत्त दिव्य स्त्रियाँ हैं उनके साथ जिसको इच्छा हो वह महाक्रीड़ा करे॥ ३०॥

समीक्षा—विष्णुजी ने परस्त्रीगमन किया हो या नहीं वह दूसरी बात है। पर पुराणकार ने तो उनको महाव्यभिचारी लिख ही दिया है। यदि उपरोक्त बात पुराण की सत्य है तो विष्णु के दुश्चरित्र, परस्त्रीगामी होने की बात स्पष्ट है। उन्होंने पहले तो स्वयं पाताल में जाकर वहाँ की औरतों को भोग डाला और बहुत से बच्चे पैदा कर दिये। जब अपना मन सन्तुष्ट हो गया तो अपने साथी देवताओं को प्रेरित किया कि अब तुम भी जाकर डुबकी लगा लो। ऐसे परस्त्रीगामी देवताओं की भक्ति से भक्तों में भी वही गुण नहीं आवेंगे जो देवताओं में होते हैं, इसमें क्या गारण्टी है? जैसे उपास्य होंगे वैसे ही उपासक बनेंगे, जैसे गुरु होंगे वैसे चेला बनेंगे। इसलिए देवताओं के उपासक अधिकांश में व्यभिचार प्रिय देखे जाते हैं।

हमारी दृष्टि में तो यह पुराण की गन्दी बात सनातनी कूड़ेदान का अभिन्न भाग है जिसको देखकर विद्वान् इस सनातन धर्म से घृणा करते हैं।

बालखिल्यों की उत्पत्ति

अथ काली शिवश्चोभौ चक्रतुर्विधिवन्मुदा।
वह्निप्रदक्षिणां तात लोकाचारं विधाय च॥ ४॥
तस्मिन्नवसरे चाहं शिवमायाविमोहितः।
अपश्यञ्चरणे देव्या नखेन्दुञ्च मनोहरम्॥ ५॥
दर्शनात्तस्य च तदाऽभूवं देवमुने ह्यहम्।
मदनेन समाविष्टोऽतीव क्षुभितमानसः॥ ६॥
मुहुर्मुहुरपश्यं वै तदङ्गं स्मरमोहितः।
ततस्तद्दर्शनात्सद्यो वीर्यं मे प्रच्युतद् भुवि॥ ७॥
रेतसा क्षरता तेन लज्जितोऽहं पितामहः।
मुने व्यमर्दं तच्छिश्नं चरणाभ्यां हि गोपयन्॥ ८॥

Scanned by CamScanner

मम तद्रेतसा तात मर्दितेन मुहुर्मुहुः।
अभवन्कणकास्तत्र भूरिशः परमोऽज्ज्वलाः॥ ३४॥
ऋषयो बहवो जाता बालखिल्या सहस्त्रशः॥ ३५॥

—(शिव पु० पार्वती खं० अ० ४९)

अर्थ—पार्वती के विवाह में ब्रह्मा जी पुरोहित थे वे कहते हैं—हे तात! तब लोकाचार का विधान करके शिव व पार्वती ने विधिपूर्वक अग्नि की परिक्रमा की॥ ३॥ हे मुने! उसी समय शिव माया से विमोहित होकर मैंने देवी (पार्वती) के मनोहर नखचन्द्र, (पैर के नाखून) का दर्शन किया॥ ५॥ हे मुने! दर्शनमात्र से ही मैं क्षुभित हो गया और काम से मेरा मन क्षोभ को प्राप्त हो गया (मैं कामातुर हो गया)॥ ६॥ और बारम्बार मोहित होकर मैं देवी के नखचन्द्र को देखने लगा, और उसी के दर्शन से पृथ्वी पर मेरा वीर्यपात हो गया॥ ७॥ वीर्यपात होने से मैं बड़ा लज्जित हुआ और चरणों से उसे छिपाते हुए गुप्तांग को (मैंने) मर्दन किया॥ ८॥ मेरे उस वीर्य के बार-बार मर्दन होने से बहुत से उज्ज्वल कण हो गये जिनसे सहस्त्रों बालखिल्य ऋषि प्रकट हुए॥ ३४-३५॥

समीक्षा—ब्रह्माजी का एक स्त्री के पैर के नाखून को विवाह के अवसर पर देखने मात्र से शुक्रपात हो जाना, उनकी चरित्रहीनता का ज्वलन्त उदाहरण है। पाठकों ने ऐसे प्रमेह के रोगी बहुत कम देखे होंगे जैसे पुराणोक्त ब्रह्माजी थे। फिर उस पतित शुक्र को पैरों से मर्दन करने से ८०,००० बालखिल्य ऋषि भी वहीं पैदा हो गये। यह मनोरंजक गपोड़ा है सनातन धर्म के शास्त्रों में ऋषि मुनियों को कलंकित करने वाले, देवताओं को चरित्रहीन बताने वाले गपोड़ों की भरमार है। हम तो इस ऊट-पटांग घटना को गपोड़ा ही मानते हैं। पौराणिक विद्वान् इसे सत्य मानते हैं तो यह भी सनातनी कूड़ेदान की एक कलङ्ककारिणी गन्दगी है, यह मानना पड़ेगा। ऐसे दुर्बल चरित्र को ईश्वर या पूजनीय कैसे माना जा सकता है।

शिवजी का पार्वती को विचित्र आदेश

पुरा गणेशं द्रष्टुं च प्रजग्मुः सर्वदेवताः।
श्वेतद्वीपात् स्वयं विष्णुर्जगाम शङ्करास्तवान्॥ १४६॥
तं दृष्ट्वा पार्वती तदा विष्णोर्वदनेक्षणा।
मुखमाच्छादयामास वाससा व्रीडिता सती॥ १५१॥
अतीव सुन्दरं रूपं दर्शं दर्शं पुनः पुनः।
ददर्श मुखमाच्छाद्य निमेषरहिता सती॥ १५२॥

Scanned by CamScanner

परमद्भुतवेषं च सस्मिता वक्रचक्षुषा।
सुखसागरसंमग्ना बभूव पुलकाञ्चिता॥ १५३॥
दृष्ट्वा तु पार्वती भक्त्या पुलकाञ्चितविग्रहा।
मनसा पूजयामास परमात्मानमीश्वरम्॥ १५८॥
दुर्गान्तराभिप्रायं च बुबुधे शङ्करः स्वयम्।
सर्वान्तरात्मा भगवानन्तर्यामी जगत्पतिः॥ १५९॥
दुर्गाञ्च निर्जनीभूय तमुवाच हरः स्वयम्।
बोधयामास विविधं हितं तथ्यमखण्डितम्॥ १६०॥
निवेदनं मदीयञ्च निबोध शैलकन्यके।
शृङ्गारं देहि भद्रं ते हरये परमात्मने॥ १६१॥

—(ब्रह्मवैवर्त पु० कृष्ण जन्म खं० अ० ६ कलकत्ता)

पूर्वकाल में विष्णु जी सब देवताओं के साथ गणेश जी को देखने के लिए श्वेत द्वीप में शंकर जी के मकान पर गये। वहाँ पार्वती प्रसन्नवदन होकर विष्णु को देखने लगी और अपने मुँह को ढक दिया। विष्णु के अति सुन्दर स्वरूप को अपने मुँह को आच्छादित करके पार्वती बारम्बार बिना पलक मारे नेत्रों से देखने लगीं। पार्वती तिरछी निगाह से विष्णु के परम अद्भुत स्वरूप को देखकर शरीर से पुलकायमान होकर सुखसागर में मग्न हो गई। पार्वती की उस भक्ति एवं शरीर से पुलकायमान होने की दशा को देखकर विष्णु ने अपने मन में पूजा की। पार्वती के मन की बात को जगत्पति, सर्वान्तर्यामी सब की आत्मा शिवजी ने जान लिया उन्होंने स्वयं पार्वती को एकान्त में बुलाकर अनेक प्रकार के हितकारी वाक्यों से समझाते हुए उससे कहा। हे पार्वती तू मेरे इस निवेदन को सुन और (मेरे कहने से) विष्णु को अपना शृंगार दान कर दे (कुकर्म करा ले)।

समीक्षा—विष्णु जी केवल गणेश जी को देखने के लिए शिवजी के घर गये थे पार्वती की इच्छा करके नहीं गये थे। पुराणकार लिखता है कि पार्वती उन पर मुग्ध हो गई। जब शिवजी ने यह दृश्य देखा तो दोनों का मन रह जावे एवं विष्णु का भी आदर सत्कार पूरी तरह से हो जावे, इस विचार से उन्होंने पार्वती को शृंगार दान करने के लिए बड़ी नम्रता के साथ एवं तर्कपूर्ण भाषा में आग्रह किया। हमारे विपक्षी सनातनी विद्वानों में आतिथ्य सत्कार की यह पवित्र प्रथा अब भी जारी है या नहीं, यह तो हमें ठीक ज्ञात नहीं है, पर हमारा विचार है कि ऐसी प्रथाओं के जारी हो जाने से हमारे पौराणिक विद्वानों के घरों पर अतिथियों के रोजाना आने-जाने का ताँता

Scanned by CamScanner

लगा रहेगा और इस मँहगाई के युग में वे आर्थिक संकट में पड़ जावेंगे। अच्छा हो कि शिव पार्वती व विष्णु के चरित्र की इस घटना का उनके अन्ध भक्त लोग अनुकरण न करें। हमारी दृष्टि में आदर सत्कार का यह प्रकार बुद्धिमान् लोगों की निगाह में एक गन्दी प्रथा है, जो कि पौराणिक कूड़ेदान की शोभा बढ़ाती है।

विलक्षण अतिथि सत्कार

युधिष्ठिर ने भीष्म से पूछा कि गृहस्थ मनुष्य मृत्यु से कैसे तर सकते हैं। भीष्म ने उत्तर में एक कथा सुनाई कि सुदर्शन नाम का एक ब्राह्मण था। उसकी स्त्री का नाम ओद्यवती था। उसने अपनी पत्नी से कहा—

अतिथेः प्रतिकूलं ते न कर्त्तव्यं कथञ्चन॥ ४२॥
येन येन च तुष्येत नित्यमेव त्वयातिथिः।
अप्यात्मनः प्रदानेन न ते कार्या विचारणा॥ ४३॥

अर्थ—तुझे अतिथि के प्रतिकूल कभी भी कोई कामना नहीं करनी चाहिए॥ ४२॥ जिस जिस उपाय से नित्य-नित्य अतिथि सन्तुष्ट रहे। चाहे अपना शरीर ही क्यों न दान करना पड़े, तुझे इसमें विचार नहीं करना चाहिए॥ ४३॥

एक दिन सुदर्शन जंगल में लकड़ियाँ लेने गया था। पीछे से एक (पौराणिक) ब्राह्मण अतिथि बनकर उसके घर में आया और औद्यवती से बोला—

यदि प्रमाणं धर्मस्ते गृहस्थाश्रमसम्मतः।
प्रदानेनात्मनो राज्ञि कर्तुमर्हसि मे प्रियम्॥ ५४॥

अर्थ—यदि तुझे गृहस्थ धर्म प्रमाण है तो तू अपना शरीर प्रदान करके मुझे प्रसन्न कर सकती है। यह सुनकर औद्यवती ने और पदार्थों से उसे प्रसन्न करना चाहा, किन्तु उसने शरीर प्रदान के बिना अन्य वस्तु स्वीकार नहीं की। तब—

सा तु राजसुता स्मृत्वा भर्तुर्वचनमादितः।
तथेति लज्जमाना सा तमुवाच द्विजर्षभम्॥ ५६॥
ततो विहस्य विप्रर्षिः सा चैवाथ विवेश ह॥ ५७॥

अर्थ—वह राजा की पुत्री सुदर्शन की पत्नी प्रथम दिवस के पति के वचन को याद करके लज्जित हुई उस ब्राह्मण से कहने लगी बहुत अच्छा॥ ५६॥ तब प्रसन्न होकर वह पौराणिक ब्राह्मण और औद्यवती एकान्त स्थान में प्रविष्ट हो गये॥ ५७॥

Scanned by CamScanner

थोड़ी देर में सुदर्शन लकड़ियाँ लेकर आया और उसने पत्नी को आवाज दी कि तू कहाँ है। किन्तु—

तस्मै प्रतिवचः सा तु भर्ते न प्रददौ तदा।
कराभ्यां तेन विप्रेण स्पृष्टा भर्तृवृता सती॥ ६०॥
उच्छिष्ठा स्मीति मन्वाना लज्जिता भर्तुरेव च।
तूष्णीं भूत्वा भव साध्वी न चोवाचाथ किञ्चन॥ ६१॥

अर्थ—उसने पति की बात का उत्तर नहीं दिया क्योंकि ब्राह्मण ने उसे हाथों से स्पर्श (पकड़) रखा था॥ ६०॥ मैं उच्छिष्ट हूँ। यह समझकर लज्जित हुई पति के सामने चुप साध गई। और कुछ न बोली॥ ६१॥

तब अन्दर कुटी में से ब्राह्मण (पौराणिक पण्डित) बोला, वह तो मेरे पास है। यह सुनकर सुदर्शन बोला कि—

सुरतं तेऽस्तु विप्राग्र्य प्रीतिर्हि परमा मम।
गृहस्थस्य हि धर्मो अग्र्यः सम्प्राप्तातिथिपूजनम्॥ ६९॥
निःसन्दिग्धो यथा वाक्यं मे तन्मे समुदाहृतम्।
तेनाहं विप्र सत्येन स्वयमेवात्ममालभे॥ ७२॥

अर्थ—हे ब्राह्मण! तेरा विषयभोग सफल हो। मैं बहुत प्रसन्न हूँ। अतिथि की पूजा गृहस्थ का मुख्य धर्म है॥ ६९॥ मैंने यह स्पष्ट शब्द इस समय कहे हैं। हे प्रिय! इसमें सन्देह नहीं है। इस सत्य को सिद्ध करने के लिए मैं स्वयं अपने शरीर को छूकर शपथ खाता हूँ॥ ७२॥ इस पर आकाशवाणी हुई—

विजितश्च त्वया मृत्युर्योऽयं त्वामनु गच्छति॥ ८०॥

—(महा० अनुशासन पर्वान्तर्गत दान पर्व अ० २)

अर्थ—हे सुदर्शन! तूने उस मौत को जीत लिया जो तेरे पीछे-पीछे फिरती थी। भीष्म बोले—अतः हे युधिष्ठिर! प्रत्येक प्रकार से अतिथि की पूजा करने से गृहस्थी मृत्यु को जीत लेता है।

सुदर्शन ने अपनी पत्नी को व्यभिचारिणी बनाया

स पुत्रोऽपि हतो भार्यां पुंश्चलीं कृतवान् द्रुतम्।
पश्चात्तापमनु प्राप्य स्वपित्रा परिभर्त्सितः॥ ३५॥

—(शिव पु० कोटिरुद्रसं अ० १३)

Scanned by CamScanner

अर्थ—उस दुराचारी पुत्र ने अपनी स्त्री को भी शीघ्र ही व्यभिचारिणी कर दिया। तब उसके पिता ने पश्चात्ताप करके उसे धिक्कारा।

समीक्षा—महाभारत तथा शिवपुराण से सुदर्शन की पत्नी के व्यभिचारिणी होने की बात स्पष्ट कर महाभारतकार ने इस अतिथि सत्काररूपी पौराणिक व्यभिचार को धर्म माना है। जब कि शिव-पुराण ने उसे पाप माना है। यह मतभेद दोनों में क्यों है? इसे सनातनी विद्वान् स्पष्ट करें। अतिथि सत्कार की यह परिपाटी शायद हमारे विपक्षी सनातनी कट्टर विद्वानों के परिवारों में अब भी चालू रहेगी। क्योंकि यह उनका शास्त्रीय विधान है पर वास्तविक बात तो यह है कि व्यभिचार को प्रोत्साहन देने के लिए पौराणिक पण्डितों ने इस कथा को गढ़कर महाभारत में घुसेड़ दिया है ताकि भोली एवं धर्म में अन्ध श्रद्धा रखने वाली उनकी अन्ध भक्त सनातनी विचार की जनता को अतिथि सत्कार के नाम पर व्यभिचार के लिए तैयार किया जा सके। हम तो इसे ऐसा ही समझते हैं। पर यदि हमारे विपक्षी पौराणिक विद्वान् इसे सत्य मानते हैं तो स्पष्ट है कि यह कथा उनके पौराणिक कूड़ेदान की व्यभिचार को प्रोत्साहन देने वाली भयंकर गन्दगी है। हमारा धर्म इसी प्रकार की बातों से विश्व में कलंकित होता है। अपनी स्त्रियों को व्यभिचार के लिए ऐसे अतिथिरूपी गुण्डों को पेश करना कितनी नीचता की बात है। खेद है कि ऐसी बातों को मानने व उन पर अमल करने वाले हमारे विपक्षी विद्वान् भी अपने को सनातनधर्मी कहने में लज्जा अनुभव नहीं करते।

विलक्षण लोकविज्ञान

भूमेर्योजनलक्षे तु सौरमैत्रेयमण्डलम्।
लक्षाद्दिवाकरस्यापि मण्डलं शशिनः स्थितम्॥ ५॥
पूर्णे शतसहस्त्रे तु योजनानां निशाकरात्।
नक्षत्रमण्डलकृत्स्नमुपरिष्टात्प्रकाशते॥ ६॥
द्वे लक्षे चोत्तरे ब्रह्मन् बुधो नक्षत्रमण्डलात्।
तावत्प्रमाणभागे तु बुधस्याप्युशनाः स्थितः॥ ७॥
अङ्गारकोऽपि शुक्रस्य तत्प्रमाणेऽध्यवस्थितः।
लक्षद्वये तु भौमस्य स्थितो देवः पुरोहितः॥ ८॥
शौरिर्बृहस्पतेश्चोर्ध्वं द्विलक्षे समवस्थितः।
सप्तर्षिमण्डलं तस्माल्लक्षमेकं द्विजोत्तम॥ ९॥

Scanned by CamScanner

ऋषिभ्यस्तु सहस्राणां शतादूर्ध्वं व्यवस्थितः।
मेढीभूतः समस्तस्य ज्योतिश्चक्रे स्वयं ध्रुवः॥ १०॥

—(विष्णु० पु० अश० २ अ० ७७ गोरखपुर)

अर्थ—हे मैत्रेय! पृथ्वी से एक लाख योजन दूर सूर्यमण्डल है और सूर्यमण्डल से भी एक लाख योजन के अन्तर पर चन्द्रमण्डल है॥५॥ चन्द्रमा से एक लाख योजन ऊपर सम्पूर्ण नक्षत्र मण्डल प्रकाशित हो रहा है॥६॥ हे ब्रह्मन्! नक्षत्र मण्डल से दो लाख योजन ऊपर बुध और बुध से भी दो लाख योजन ऊपर शुक्र स्थित है॥७॥ शुक्र से इतनी ही दूरी पर मंगल है और मंगल से भी दो लाख योजन बृहस्पति है॥८॥ हे द्विजोत्तम! बृहस्पति से दो लाख योजन ऊपर शनि है, और शनि से एक लाख योजन के अन्तर पर सप्तर्षि मण्डल है॥९॥ सप्तर्षियों से भी सौ हजार योजन ऊपर समस्त ज्योतिश्चक्र का नाभि रूप ध्रुव मण्डल स्थित है॥१०॥

समीक्षा—पुराण बनाने वालों का नक्षत्रविज्ञान भी मनोरंजक वस्तु है। उनके हिसाब से पृथ्वी से सूर्य केवल १ लाख योजन (४ लाख कोस अथवा ८ लाख मील) दूर है। सूर्य से भी एक लाख योजन आगे चन्द्रमा है। अर्थात् हमारी पृथ्वी से चन्द्रमा दूर है और सूर्य पास है। इस प्रकार भारतीय ज्योतिष विज्ञान की संसार में हंसी इन पुराणकारों ने कराई है। इनको जब किसी बात का ठीक-ठीक पता नहीं था तो फिर इस विषय पर मौन ही रहना ठीक था। वर्तमान युग में जो आकाश मण्डल में उपरोक्त ग्रहों की खोजबीन की गई है उसके अनुसार सूर्य से ग्रहों की दूरी निम्न प्रकार है—

सूर्य से पृथ्वी (Earth) ९,३०,००,००० मील दूर है व व्यास ८००० मील है।

बुध (Mercury)	३,६०,००,०००	....	३०००
शुक्र (Venus)	६,७०,००,०००	....	८०००
मंगल (Mars)	१४,१०,००,०००	....	४२६०
बृहस्पति (Jupiter)	४८,३०,००,०००	....	७१०००
शनि (Saturn)	८६,१०,००,०००	....	७१०००
अरुण (Uranus)	१,७८,२०,००,०००	....	३३२५०
वरुण (Neptune)	२,७९,१०,००,०००	....	३७२५०
यम (Pluto)	३,७०,००,००,०००	....	३६५०

सूर्य हमारी पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा है व ९ करोड़ ३० लाख

Scanned by CamScanner

मील दूर है यदि पुराण के अनुसार यह पृथ्वी से १ लाख योजन ही दूर होता तो पृथ्वी को उसने राख का ढेर बना दिया होता। चन्द्रमा हमारी पृथ्वी से लगभग २३८००० मील दूर है यह जब भी पृथ्वी और सूर्य के बीच में आ जाता है तभी सूर्य ग्रहण पड़ जाता है तथा सूर्य व चन्द्रमा के बीच में परिभ्रमण में पृथ्वी आ जाती है तो चन्द्रमा पर सूर्य प्रकाश की रुकावट होने से एवं पृथ्वी की छाया पड़ने से चन्द्र ग्रहण बन जाता है यदि पुराण की गल्प सत्य होती तो कभी सूर्य ग्रहण पड़ते नहीं।

हमारे दृष्टिकोण से भारतीय खगोल विज्ञान को कलंकित करने वाली यह भी पुराणोक्त सनातनी कूड़ेदान की शोभा बढ़ाने वाली कोरी गल्प ही है।

मत्स्यावतार की लम्बाई

एक शृङ्गधरो मत्स्यो हैमो नियुतयोजनः ॥ ४४ ॥

—(भागवत पु० स्क० ८। अ० २४)

अर्थ—एक सींग वाले मत्स्यावतार का शरीर १ लाख योजन (४ लाख कोस अर्थात् ८ लाख मील का था)।

समीक्षा—हमारी पृथ्वी की परिधि केवल २४००० मील की है। उसमें ८ लाख मील लम्बी मछली (सनातनियों का कल्पित अवतार) कहाँ ठहरा होगा, यह समस्या पौराणिक विद्वानों को विचारणीय है। शायद पुराण बनाने वाले की खोपड़ी पर वह सवार रहता होगा। पुराणों की गप्पें भी नमूने की होती हैं।

आम का पेड़

मन्दरोत्सङ्ग एकादशशतयोजनोत्तुङ्गदेवचूतशिरसो गिरिशिखर-स्थूलानि फलान्यमृतकल्पानि पतन्ति ॥ १६ ॥

—(भागवत पु० स्क० ५ अ० १६)

अर्थ—मन्दराचल के मध्य में ग्यारह हजार योजन (८८००० मील) ऊँचा देवताओं का एक आम का वृक्ष है उस पर से पर्वत के शिखर के समान मोटे फल अमृत समान मीठे गिरते हैं।

समीक्षा—हिमालय पर्वत की सब से ऊँची चोटी केवल ५.५ मील ऊँची है। और उसी हिमालय पर ८८००० मील ऊँचा आम का पेड़ लिख मारना शेखचिल्ली का गपोड़ा नहीं तो क्या है। यह गपोड़ा भी किसी ऐसे वैसे का किसी उपन्यास में लिखा नहीं है, वरन सनातन धर्म के खास शास्त्र, पूज्य भागवत पुराण में उनके विश्वास के अनुसार साक्षात् भगवान

Scanned by CamScanner

विष्णु के परम अवतार वेदव्यासजी ने गढ़कर लिखा है ऐसी गप्पाष्टकों से युक्त होने से पुराणों को गपोड़ा साहित्य कहना उचित ही है।

आठ लाख मील ऊँचा पहाड़

एषां मध्ये इलावृतं नामाभ्यन्तरवर्षं यस्य नाभ्यामवस्थितः सर्वतः सौवर्णः कुलगिरिराजो मेरुद्वीपायामसमुन्नाहः किर्णकाभूतः कुवलयकमलस्य मूर्धनि द्वात्रिंशत्सहस्रयोजन विततो मूले षोडश-सहस्रं तावतान्तर्भूभ्यां प्रविष्टः॥ —(भागवत स्क० ५। अ० १६। श्लो० ७)

अर्थ—(जम्बू द्वीप के) मध्य में इलावृत नाम का खण्ड है जो इसके मध्य में स्थित है। और स्वर्ण का मेरु पर्वत एक लाख योजन (८००००० मील) ऊँचा है जो पर्वतों का राजा है। यह पर्वत पृथ्वी पर ३२००० मील तक फैला है, मूल में १६००० योजन विस्तृत है, उतना ही भूमि में प्रविष्ट है।

समीक्षा—हिमालय पर्वत की ही मेरु पर्वत कहते हैं। उसका उपरोक्त विवरण किसी शेखचिल्ली के गपोड़े को मात देने में क्या कम है? भूगोल एवं खगोल विज्ञान की उपरोक्त गप्पाष्टक सनातनी कूड़ेदान का अङ्ग मानी जा सकती है। जमीन से चन्द्रमा २३८००० मील केवल ऊँचा है और हिमालय ८ लाख मील ऊँचा यहाँ बता दिया। क्या सुन्दर गप्प है।

८०० मील ऊँचा किला

दुरात्मा क्षिप्यतामस्मात्प्रासादाच्छतयोजनात्।
गिरिपृष्ठे पतत्वस्मिन् शिलाभिन्नाङ्गसंहतिः॥ ११॥

—(विष्णु० पु० अंश १। १९ गोरखपुर)

अर्थ—हिरण्यकश्यपु बोला, यह (प्रह्लाद) बड़ा दुरात्मा है, इसे इस सौ योजन ऊँचे महल से गिरा दो जिससे यह इस पर्वत के ऊपर गिरे और शिलाओं से इसके अंग-अंग छिन्न-भिन्न हो जायें।

समीक्षा—आठ सौ मील ऊँचा महल बनाने को नसैनी कहाँ से आई होगी, व उस पर चढ़ा कैसे जाता होगा? इतना ऊँचा महल बना देना पुराण बनाने वाले को शेखचिल्ली बुद्धि वाला सिद्ध करता है। पुराणों में गप्पें भी चुन-चुनकर कर लिखी हैं।

ब्रह्माजी की मुसीबतें

देवोऽदेवाञ्जघनतः सृजति स्मातिलोलुपान्।
त एनं लोलुपतया मैथुनायाभिपेदिरे॥ २३॥

Scanned by CamScanner

ततो हसन् स भगवान् सुरैः निरपत्रपैः।
अन्वीयमानस्तरसा क्रुद्धोऽभीतः परापतत्॥ २४॥
स उपव्रज्य वरदं प्रपन्नार्तिहरं हरिम्।
अनुग्रहाय भक्तानामनुरूपात्मदर्शनम्॥ २५॥
पाहि मां परमात्मंस्ते प्रेषणेनासृजत् प्रजाः।
ता इमां यमितुं पापा उपाक्रामन्ति मां प्रभो॥ २६॥
त्वमेकः किल लोकानां क्लिष्टानां क्लेशनाशनः।
त्वमेकः क्लेशदस्तेषामनासन्नपदां तव॥ २७॥
सोऽवधार्यास्य कार्पण्यं विविक्ताध्यात्मदर्शनः।
विमुञ्चात्मतनुघोरामित्युक्तो विमुमोच ह॥ २८॥

—(भागवत पु० स्क० ३। अ० २०)

अर्थ—ब्रह्माजी ने अपनी जाँघ से कामासक्त असुरों को उत्पन्न किया। वे अत्यन्त कामलोलुप होने के कारण पैदा होते ही मैथुन के लिए ब्रह्माजी की ओर बढ़ चले॥ २३॥ यह देखकर पहले तो वे हँसे, किन्तु फिर उन निर्लज्ज असुरों को अपने पीछे लगा देखकर भयभीत और क्रोधित होकर बड़े जोर से भागे॥ २४॥ तब उन्होंने भक्तों पर कृपा करके उनकी भावना के अनुसार दर्शन देने वाले विष्णु के पास जाकर कहा॥ २५॥ परमात्मन्! मेरी रक्षा कीजिए मैंने तो आपकी आज्ञा से प्रजा की उत्पत्ति की थी, किन्तु यह तो पाप में प्रवृत्त होकर मुझे ही तंग करने चली है॥ २६॥ नाथ! एकमात्र आप ही दुःखी जीवों के दुःख दूर करने वाले हैं और जो आपकी चरण शरण में नहीं आते उन्हें दुःख देने वाले भी एकमात्र आप ही हैं॥ २७॥ प्रभु तो सब के हृदयों की जानने वाले हैं, उन्होंने ब्रह्मा की आतुरता को देखकर कहा, तुम अपने इस कामकलुषित शरीर को छोड़ दो॥ २८॥

समीक्षा—ब्रह्मा जी ने असुर पैदा किए, वह ब्रह्मा जी का सौन्दर्य देखकर उनसे ही मैथुन करने को भिड़ गये। ब्रह्मा जी भाग पड़े विष्णु के परामर्श पर उन्होंने आत्महत्या कर डाली। यह सब पौराणिक ईश्वर ब्रह्मा जी की असलीयत खोलने के लिए यथेष्ट है। अपने ही पूज्य देवताओं की मजाक उड़ाने वाली इन भ्रष्ट कथाओं को पुराणों में घुसेड़े रखना, मूर्खता की पराकाष्ठा है। हमारी दृष्टि में तो यह चण्डू-खाने की गप्पें हैं पर पौराणिक विपक्षी विद्वान् इन को भी सत्य मानते हैं यह उनकी बुद्धि की बलिहारी है हमारे विचार से तो यह कथा भी पौराणिक कूड़ेदान की गन्दगी का एक भाग है जो पुराणों में घुसी हुई बदबू फैला रही है।

Scanned by CamScanner

मर्द के पेट से लड़का जन्मा

प्रसेनजितो युवनाश्वोऽभवत्॥ ४८॥

तस्य चापुत्रस्यातिनिर्वेदान्मुनीनामाश्रममण्डले निवसतो दयालुर्भिर्मुनिभिरपत्योत्पादनयेष्टिः कृता॥ ४९॥ तस्यां च मध्यरात्रौ निवृत्तायां मन्त्रपूतजलपूर्णकलशं वेदिमध्ये निवेश्य ते मुनयः सुषुपुः॥ ४॥ सुप्तेषु तेषु अतीव तृट्परीतः भूपालस्तमाश्रमं विवेश॥ ४१॥ सुप्तश्च तानृषीन्नैवोत्थापयामास॥ ४२॥ तच्च कलशमपरिमेयमाहात्म्यमन्त्रपूतं पपौ॥ ४३॥ प्रबुद्धाश्च ऋषयः पपृच्छुः केनैतन्मन्त्रपूतं वारि पीतम्॥ ४४॥ अत्र हि राज्ञो युवनाश्वस्य पत्नी महाबलपराक्रमपुत्रं जनयिष्यति। इत्याकर्ण्य स राजा अजानता मया पीतमित्याह॥ ४५॥ गर्भाशयं युवनाश्वस्योदरे अभवत् क्रमेण च ववृधे॥ ४६॥ प्राप्तसमयश्च दक्षिणं कुक्षिमवनिपतेर्निर्भिद्य निश्चक्राम॥ ४७॥ न चासौ राजा ममार॥ ४८॥ ततो मान्धातृ नामा सोऽभवत्॥ ६१॥ —(विष्णु पुराण अश० ४ अ० २)

ततो वर्षशतं पूर्णे तस्य राज्ञो महात्मनः।
वामं पार्श्वं निर्भिद्य सुतः सूर्य इव स्थितः॥

—(महाभारत वन पर्व अ० १२६। २७)

अर्थ—प्रसेनजित् से युवनाश्व पैदा हुआ॥ ४८॥ युवनाश्वनिः-सन्तान होने के कारण खिन्न चित्त से मुनीश्वरों के आश्रमों में रहा करता था। उसके दुःख से द्रवीभूत होकर दयालु मुनिजनों ने उसके पुत्र उत्पन्न करने के लिए यज्ञानुष्ठान किया॥ ४९॥ आधी रात के समय उस यज्ञ के समाप्त होने पर मुनिजन मन्त्रपूत जल का कलश वेदी में रखकर सो गये॥ ५०॥ उनके सो जाने पर प्यास से अत्यन्त व्याकुल होकर राजा ने उस स्थान में प्रवेश किया और सोते होने के कारण मुनियों को उन्होंने नहीं जगाया॥ ५१-५२॥ और उस अपरिमित माहात्म्यशाली कलश के जल को उन्होंने पी लिया॥ ५३॥ जागने पर ऋषियों ने पूछा इस मन्त्रित जल को किसने पिया है?॥ ५४॥ इसका पान करने पर युवनाश्व की पत्नी महा विक्रमशील पुत्र को उत्पन्न करेगी। यह सुनकर राजा ने कहा मैंने ही बिना जाने इस जल को पी लिया है॥ ५५॥ राजा युवनाश्व के उदर में गर्भ स्थित हो गया और क्रमशः बढ़ने लगा॥ ५६॥ यथा समय बालक राजा की दायीं कोख फाड़कर निकल आया॥ ५७॥ किन्तु इससे राजा की मृत्यु नहीं हुई॥ ५८॥ उस

Scanned by CamScanner

बालक का नाम मान्धाता हुआ॥ ६१ ॥

सौ वर्ष तक युवनाश्व ने वह गर्भ धारण किया तब युवनाश्व की बाईं कोख फाड़कर सूर्य के समान तेजस्वी बालक मान्धाता बाहर निकला॥ २७ ॥

समीक्षा—इस विचित्र कथा के बारे में दो बातें हम नहीं समझ सके। पानी पीने से राजा के गर्भाधान कैसे हो गया जब कि गर्भाशय उसके शरीर में नहीं था। दूसरे यह भी मान लिया जाए कि दैवगति से गर्भ रह गया तो प्रश्न यह है कि यदि पानी ने गर्भाधानकारक औषधि का कार्य किया तो गर्भाधान राजा युवानाश्व के शरीर में किसने व किस मार्ग से किया जिससे गर्भ स्थापित हो सका! क्योंकि गर्भ धारण करने वाले के शरीर में गर्भाशय व उस तक वीर्याधान करने का मार्ग होना आवश्यक है और फिर वह गर्भ १०० साल तक राजा के पेट में कैसे फँसा रहा। जब प्रसव का समय आया तो मुनियों ने राजा के शरीर में नीचे से ऑपरेशन करके एक प्रसव द्वार क्यों नहीं बना दिया जिससे प्रसव में असानी हो जाती। एक बात और समझ में नहीं आई कि पानी पीने पर पेट की आहार नली में घूमता हुआ बड़ी आँत में पहुँचा होगा कुछ मूत्र में निकल गया होगा। न तो गर्भ मूत्राशय में रहता है और न पाखाने के भण्डार बड़ी आँत में रह सकता है उसमें तो सूत जैसे या लम्बे कीड़े ही रह सकते हैं जो पाखाने में पैदा होते हैं उस पाखाने के गोदाम बड़ी आँत में मानव गर्भ तो रह ही नहीं सकता यदि बनेगा तो सड़ जावेगा उसमें गर्भ को भोजन पहुँचाने एवं जीवित रखने वाली नाल कहाँ से आवेगी। और फिर गर्भ कोख फाड़कर ही क्यों निकला। वह सीधा मुँह या गुदा के रास्ते से क्यों नहीं निकल आया, जैसे सनातनी सिद्धान्तानुसार ब्रह्मा जी के मुँह में से ब्राह्मण निकले थे या मूत्रेन्द्रिय के मार्ग में से क्यों नहीं निकल आया जैसे शुक्राचार्य शिवजी के मूत्र मार्ग से निकल पड़े थे। (देखो हमारी पुस्तक 'शिवजी के चार विलक्षण बेटे')। पुराण में लिखा है कि गर्भ युवनाश्व की दाईं कोख फाड़कर बाहर निकला और महाभारतकार लिखता है कि बाईं कोख में से निकला। इन दोनों में इतना मतभेद क्यों है? यदि घटना सत्य थी तो वर्णन एक ही प्रकार से होना चाहिए था।

हमारे विचार से तो यह भी एक पौराणिक गपोड़ा है और सनातनी कूड़ेदान की शोभा बढ़ाने वाला है। ऐसे ही गपोड़ों से वर्तमान फर्जी सनातन धर्म शोभा पाता है।

एक नील सैनिकों का गपोड़ा

तिस्रः कोट्यः सहस्राणामष्टाशीति शतानि च।
आसन् यदुकुलाचार्याः कुमाराणामिति श्रुतम्॥ ४१ ॥

Scanned by CamScanner

संख्यानं यादवानां कः करिष्यति महात्मनाम्।
यत्रायुतानामयुतलक्षेणास्ते स आहुकः॥ ४२॥

—(भागवत स्क० १० अ० ९०)

अर्थ—मैंने सुना है कि यदुवंश के बालकों की शिक्षा देने के लिए ३८८.००.००० अध्यापक (आचार्य) थे॥ ४१॥ ऐसी स्थिति में महात्मा यदुवंशियों की संख्या तो बताई ही कैसे जा सकती है। स्वयं महाराज उग्रसेन के साथ १ नील (१,००,००,००,००,००,०००) सैनिक रहते थे॥ ४२॥

समीक्षा—तीन करोड़ अट्ठासी लाख मास्टर और एक नील सैनिक यदि जमीन पर लेटने को खाटें बिछाते होंगे तो जमीन समुद्र व पहाड़ सभी का क्षेत्रफल मिलाकर सारी पृथ्वी पर भी नहीं समा सकेंगे। कोई भी हिसाब लगाकर देख लेवे। यदि पेशाब करते होंगे तो जमीन पर समुद्र बन जाते होंगे। पीने के लिए कुएँ-नदी तालाब समुद्र सूख जाते होंगे। भोजन तो वह पुराण बनाने वाले के घर में करते होंगे और उसकी बीबी खाना बनाती होगी। उनको खाना परसने को भी अरबों खरबों नौकर रहते होंगे। जब एक नील सैनिक थे तो उनके माँ, बाप, भाई, बहिन, रिश्तेदार, जाति बिरादरी, बीबी-बच्चे भी होंगे और सब मिलकर पचासों नील की संख्या से क्या कम होंगे उनके लिए मकान आदि सब सनातन धर्म सभाओं के दफ्तरों में बनाए जाते होंगे या वे सब मिलकर भागवत पुराण के बनाने वालों की गंजी खोपड़ी के ऊपर निवास करते होंगे। ऐसी चण्डूखाने की गप्पाष्टकें इस भागवत पुराण में भरी हैं जिन्हें देखकर हँसी आती है। इसीलिए एक पुराणकार ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि—

''शुक्रप्रोक्तं भागवतं''॥ ११॥

—(भविष्यपुराण प्रतिसर्ग पर्व खं० ३। २८)

अर्थात्—भागवत पुराण दैत्यों के गुरु काने शुक्राचार्य ने बनाया था। दैत्य गुरु की बातें दैत्यों जैसी होनी चाहिए। भागवत पुराण की उपरोक्त गप्प उसके बनाने वाले दैत्यराज के ही गुणों के अनुरूप हैं। सनातनी कूड़ेदान में ऐसी ही बे सिर-पैर की गप्पें भरी पड़ी हैं।

इन्द्र का सनातनी आचरण

सुचन्द्रस्य गृहे रम्भा ललाभ जन्म भारते॥ ४४॥
नाना कौतुकसंयुक्तां ददौ जनमेजयाय च॥ ४६॥
एकदा नृपतिश्रेष्ठः अश्वमेधेन दीक्षितः॥ ४७॥

Scanned by CamScanner

अश्वसंगोपनं कृत्वा तस्थौ शक्रश्च मन्दिरे।
यज्ञाश्वं रुचिरं मत्वा कौतुकेन च सुन्दरी॥ ४८॥
द्रष्टुं जगाम सा साध्वी चाश्वमेवैकाकिनी मुदा।
शक्रो अश्वनिकटे भूत्वा धर्षयामास तां सतीम्॥ ४९॥
तया निवार्यमाणश्च रेमेतत्र तया सह।
मूर्छामवाप शक्रश्च बुबुधेन दिवानिशम्॥ ५०॥
सा च सम्भोगमात्रेण देहं तत्याज्य योगतः।
नृपस्य लज्जया भीत्या शुक्रः स्वर्गे जगाम ह॥ ५१॥

—(ब्रह्मवैवर्त खं० ४ अ० १४ कलकत्ता)

अर्थ—राजा चन्द्र के घर में भारतवर्ष में रम्भा ने जन्म लिया॥ ४४॥ राजा ने नाना प्रकार की सजधज के साथ अपनी उस पुत्री को राजा जनमेजय के साथ ब्याह दिया॥ ४६॥ एक बार राजा ने अश्वमेध यज्ञ किया॥ ४७॥ इन्द्र उसके मकान में छिपकर घोड़े के पीछे बैठ गया। यज्ञीय अश्व के सौन्दर्य को देखने को वह कन्या सानन्द वहाँ गई॥ ४८॥ वह वहाँ अकेली ही गई। इन्द्र ने घोड़े के समीप जाकर उस सती को पकड़ कर अपने वश में कर लिया॥ ४९॥ उस देवी के मना करने पर भी सनातनी देवराज इन्द्र ने उसके साथ भोग कर लिया तब इन्द्र मूर्छा को प्राप्त हो गया और दिन व रात तक नहीं जागा॥ ५०॥ उस स्त्री ने सम्भोग हो जाने से योग द्वारा अपना शरीर त्याग दिया तथा इन्द्र भी राजा के भय पर लज्जा से स्वर्ग को चला गया॥ ५१॥

समीक्षा—पौराणिक देवता गण अपने कुकर्मों के लिए विख्यात हैं। इन्द्र भगवान् ने भी जो आचरण किया, वह भी पौराणिक शास्त्रों की दृष्टि में साक्षात् सनातन धर्म के अनुकूल पौराणिक विद्वान् मानते हैं। इस प्रकार के व्यभिचार की कथाओं को पुराणों में पढ़कर पौराणिक भोली जनता व्यभिचार को भी धर्म मानने लगी है। स्पष्ट है कि पुराणों ने देश में व्यभिचार के प्रसार में योग दिया है। हमारी दृष्टि में तो यह सारी कथा ही गप्पाष्टक है। यह मूर्खों की रचना है जो पुराणों में घुसेड़ी गई है और यदि इस कथा को सत्य माना जायेगा तो यह भी पौराणिक कूड़ेदान की एक गन्दगी सिद्ध होगी।

ब्रह्मा की नाक में से सूअर निकला

इत्यभिध्यातो नासा विवरात्सह सानघ।
वराहमेको निरगाद् अङ्गुष्ठपरिमाणकः॥ १८॥

—(भागवत पु० स्कन्ध ३ अ० १३)

Scanned by CamScanner

अर्थ—ब्रह्माजी विचार कर रहे थे कि उनकी नाक में से अंगूठे के आकार का एक सुअर (का बच्चा) निकल पड़ा।

समीक्षा—यही सुअर का बच्चा सनातन धर्म में वराह अवतार कहा जाता है जिसने पानी में डूबी पृथ्वी का उद्धार किया था। ब्रह्माजी का शरीर क्या था? भिन्न-भिन्न प्रकार के जीव जन्तुओं को पैदा करने की फैक्ट्री थी। जाँघ में से असुर पैदा किए, भृकुटी से महादेव पैदा हो पड़े तो नाक में से सुअर पैदा हो गया यदि ऐसा ही कोई जादूगर या बाजीगर आज के युग में आ जावे तो सनातनी ग्रन्थकारों के इन चत्मकारों की पुष्टि हो जावे। वरना आज का मानव तो इन बातों को शेखचिल्ली की गप्पाष्ट ही मानेगा।

श्रीकृष्ण की ३० करोड़ पत्नियाँ

त्रिंशत्कोटिञ्च गोपानां गृहीत्वा भर्त्तुराज्ञया।
पुण्यञ्च भारतं क्षेत्रं गौलोकादाजगाम सा॥ ८७॥
ताभिः सार्धं स रेमे च स्वपत्नीभिर्मुदान्वितः॥ ८८॥

—(ब्रह्मवैवर्त पु० कृष्ण जन्म खण्ड उत्तरार्ध अ० ११५)

अर्थ—श्रीकृष्ण की आज्ञा से ३० करोड़ गोपियों ने गोलोक से भारतवर्ष में आकर जन्म लिया और यहां कृष्ण जी ने अपनी पत्नी के रूप में आनन्द पूर्वक उनके साथ रमण किया।

समीक्षा—बहुधा कृष्ण जी की १६१०८ पत्नियाँ ही प्रसद्धि थीं पर इस पुराणकार ने तो गजब ढाह दिया है एकदम पत्नियों की संख्या ३० करोड़ तक पहुँचा दी है। समझ में नहीं आता है कि श्रीकृष्ण जी भोगेश्वर थे या योगेश्वर थे। स्त्री-भोगों का योग से सनातन धर्म में क्या सम्बन्ध है इसे पौराणिक विद्वान् कृपया स्पष्ट कर दें। तीस करोड़ औरतें (मथुरा, वृन्दावन या द्वारिका में) रहती व सोती बैठती कहाँ थीं उस समय तो देश की जनसंख्या भी इतनी नहीं थी शायद पुराण बनाने वाले गप्पाष्टकी की खोपड़ी में ही उनका निवास रहता होगा।

इन पुराण बनाने वालों ने हमारे धर्म को इसी प्रकार की गप्पें लिख लिख कर संसार में बदनाम किया हुआ है।

शिवजी के चार मुँह

तिलोत्तमा नाम पुरा ब्रह्मणा योषिदुत्तमा।
तिलं तिलं समुद्धृत्य रत्नानां निर्मिता शुभा॥ १॥
यतो यतः सुदती मामुपाधा वदन्ति के।
ततस्ततो मुखं चारु मम देवि विनिर्गतम्॥ २॥

Scanned by CamScanner

तां दिदृक्षुरहं योगाच्चतुर्मूर्तित्वमागतः।
चतुर्मुखश्च संवृत्तो दर्शयन् योगमुत्तमम्॥ ३॥

—(महाभारत अनु० अ० १४१)

अर्थ—शिवजी ने कहा, पूर्वकाल में ब्रह्मा ने एक सर्वोत्तम नारी की सृष्टि की थी। उन्होंने सम्पूर्ण रत्नों का तिल तिल भर सार उद्धृत करके उस शुभ लक्षणा सुन्दरी के अङ्गों का निर्माण किया था। इसलिए वह तिलोत्तमा नाम से प्रसिद्ध हुई॥ १॥ बस सुन्दर दांतों वाली सुन्दरी निकट से मेरी परिक्रमा करती हुई जिस दिशा की ओर गई उस उस दिशा की ओर मनोरम मुख प्रकट होता गया॥ २॥ तिलोत्तमा के रूप को देखने की इच्छा से योगबल से मैं चतुर्मुख हो गया इस प्रकार मैंने लोगों को उत्तमोत्तम योगशक्ति का दर्शन कराया॥ ३॥

समीक्षा—तिलोत्तमा नाम की सुन्दरी स्त्री के रूप पर शिवजी इस कदर मोहित हो गए कि उनकी आँखें उस पर चिपक कर रह गईं। वह उनके चारों ओर जब घूमने लगी तो अन्य देवता लोग उनकी मजाक न बनायें इसलिए उन्होंने सर घुमाकर उसे देखते रहने की बजाय अपने तीन तरफ तीन मुँह और बना लिये वे उसके सौन्दर्य को तबियत भर के देखते रहे। शिवजी की उसी कामातुर अवस्था में प्रकट हुए चार मुँह की नकल बनाकर चतुर्मुखी शिवजी की शिव-मन्दिरों में आज भी पूजा होती है। यह शिवजी का रहस्य जब पाठकों पर प्रकट होगा तो वे इस पर हँसे बिना न रहेंगे। अपने ही पूज्य देवताओं की मजाक उड़ाने में पौराणिक विद्वानों ने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है।

विचित्र योगविज्ञान

अङ्गुष्ठगुल्फजानूरूमूलाधारलिङ्गनाभिषु॥ २२॥
हृद्ग्रीवाकण्ठदेशेषु लम्बिकायां ततो नसि।
भ्रूमध्ये मस्तके मूर्ध्नि द्वादशान्ते यथाविधि॥ २३॥
धारणं प्राणमरुतो धारणेति निगद्यते॥ २४॥

—(देवी भागवत स्क० ७। अ० ३५)

अर्थ—अंगूठा, घुटना, जाँघ, गुदा, लिङ्ग, नाभि, हृदय, ग्रीवा, कण्ठ, नाक का अग्र भाग, भृकुटी का मध्य भाग और मूर्धा यह बारह स्थान शरीर में है। प्राणवायु को रोककर इन स्थानों में ध्यान करना चाहिए।

समीक्षा—पौराणिकों का योग भी विलक्षण प्रकार का होता है। गुदा व लिङ्ग इन्द्रियों में मन को केन्द्रित करके ध्यान करने से सनातनी विद्वानों

Scanned by CamScanner

को कौन-सी सिद्धि प्राप्त होगी यह हम नहीं समझ सके हैं। साधारणतया यह तो समझा जा सकता है कि मन: शक्ति को शरीर के जिस भाग में केन्द्रित किया जायेगा उस स्थान की शक्ति विकसित होगी। उस स्थान की मांसपेशियों में बल आयेगा। कुछ विशेष स्थानों का विशेष प्रभाव भी होता है जैसे कण्ठ कूप में ध्यान करने से भूख प्यास की निवृत्ति होती है। नाभिचक्र में ध्यान करने से अपने शरीर विज्ञान का ज्ञान होता है, कान में ध्यान करने से आकाश में व्याप्त सूक्ष्म शब्दों को ग्रहण करने की सामर्थ्य पैदा होती है, भृकुटी के मध्य में ध्यान करने से लघु मस्तिष्क में संगृहीत जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों का एवं भूत, वर्तमान व भविष्य की बातों का प्रत्यक्ष होता है, इत्यादि। किन्तु लिङ्ग (उपस्थेन्द्रिय) में ध्यान करने से तथा वहाँ मन: शक्ति के केन्द्रित होने से सिवाय इसके कि विषयभोगों की प्रवृत्ति अत्यधिक हो जाये अथवा स्तम्भन शक्ति बढ़ जाये और क्या लाभ होगा? गुदेन्द्रिय में मन को केन्द्रित करने से सनातनी विद्वानों को टट्टी की दुर्गन्ध सूँघने में आनन्द आयेगा अथवा अन्य लाभ होंगे उन्हें वे ही जान सकेंगे। यदि कहीं इन दोनों अङ्गों में रक्ताभिसरण क्रिया के बढ़ जाने से अर्श के मस्से पैदा हो गये तो पौराणिक योगियों का जीवन ही सफल हो जावेगा। आखिर सनातनी पुराणकारों को मल व मूत्रेन्द्रिय में ध्यान करने का स्थान लिखने की आवश्यकता ही क्यों अनुभव हुई। सनातनी कूड़ेदान में हर प्रकार की गन्दगी के नमूने मौजूद हैं।

यज्ञ व विवाह में सूअर का दान दें

आदिवाराहदानं ते कथयामि युधिष्ठिर।
धरण्यै यत्पुरा प्रोक्तं वराहवपुषा मया॥ १॥
पुण्यं पवित्रमायुष्यं सर्वं दानोत्तमोत्तमम्।
महापापादिदोषघ्नं पूजितं धर्मसत्तमै:॥ २॥
देयसंक्रमणे भानोर्ग्रहणे द्वादशीष्वथ।
यज्ञोत्सवविवाहेषु दु:स्वप्नाद्भुतदर्शने॥ ३॥
कुरुक्षेत्रादितीर्थेषु गङ्गाद्यासु नदीषु च।
पुरेषु च पवित्रेषु अरण्येषु वनेषु च॥ ४॥
गोष्ठदेवालये वापि रथे वा स्वगृहाङ्गणे।
देयं पुराणविधिना ब्राह्मणाय कुटुम्बिने॥ ५॥

—(भविष्य पु० उ० पर्व अ० १९४)

Scanned by CamScanner

भावार्थ—हे युधिष्ठर! मैं वराह के दान का माहात्म्य बताता हूँ यह पवित्र पुण्यदायक एवं सब दानों से श्रेष्ठ दान है। सुअर के दान करने से महान् पापों के दोष नष्ट हो जाते हैं ऐसा सब धर्मज्ञ लोग बताते हैं। सूर्य ग्रहण पर, द्वादशी के दिन, यज्ञ उत्सवों में विवाह के अवसर पर अथवा खराब स्वप्न दीखने पर सुअर का दान देना चाहिए। कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों में, गंगादि नदियों पर, नगरों में, पवित्र आरण्य में, वनों में, गोष्ठों में, देवताओं में, रथों में अथवा अपने मकानों पर पुराण की विधि से सुअर का दान (पौराणिक) पण्डित जी को दिया करो तो उपरोक्त फल प्राप्त होंगे।

समीक्षा—यदि यह प्रथा चालू हो जावे और सनातनी लोग हमारे विरोधी पौराणिक विद्वानों को हर शुभ अवसर पर सुअर दान में देने लगें तो यह इन लोगों का एक सुन्दर धन्धा बन जायेगा। रोजाना सबेरे शाम उनको चराने के लिए डण्डा हाथ में लेकर बम्पुलिस (पब्लिक शौचालयों) पर ले जाया करेंगे व शाम को उनका दूध पिया करेंगे। उनको महतरों की शादियों के अवसरों पर ऊँचे दामों में बेचकर यह लोग मालामाल भी बन सकेंगे। इनका भी संकट दूर हो जायेगा, उधर सुअर दान व इन शूकरपालक विद्वानों की दुआएँ मिलने से पौराणिक दानदाताओं का भी कल्याण हो जायेगा। हमारी शुभ कामना है कि सनातनी बन्धु पुराणोक्त इस अवस्था पर शीघ्र आचरण प्रारम्भ करने की शक्ति पशुनाथ शिवजी से प्राप्त करें।

सृष्टि की विचित्र उत्पत्ति

प्रचेतसस्तथा रक्षःकन्याषष्ठिमजीजनत्।
ता वै ब्रह्मर्षयः सर्वाः प्रजार्थं प्रतिपेदिरे॥ १७॥
ताभ्यो विश्वानि भूतानि देवा पितृगणस्तथा।
गन्धर्वाप्सरसश्चैव रक्षांसि विविधानि च॥ १८॥
पतत्रिमृगमीनाश्चाल्पवर्गाश्च महोरगाः।
तथा पक्षिगणाः सर्वे जलस्थलविचारिणः॥ १९॥
उद्भिदः स्वेदजाश्चैव साण्डजाश्च जरायुजाः।
जज्ञे तात जगतः सर्वं तथा स्थावरजङ्गमम्॥ २०॥

—(महाशान्ति पर्व अ० १६६)

अर्थ—प्रचेताओं के पुत्र दक्ष ने ६० कन्याओं को जन्म दिया उन सब को प्रजाओं की उत्पत्ति के लिए ब्रह्मर्षियों ने पत्नी रूप में प्राप्त किया॥ १७॥ इनकी कन्याओं से समस्त प्राणि, देवता, गन्धर्व, अप्सरा, नाना प्रकार के राक्षस, पशु, पक्षी, मत्स्य, वानर, बड़े-बड़े नाग, जल स्थल में विचरने वाले

Scanned by CamScanner

सब प्रकार के पक्षीगण उद्भिज, स्वदेज, अण्डज, और जरायुज प्राणी उत्पन्न हुए। तात! इस प्रकार सम्पूर्ण स्थावर और जंगम जगत् उत्पन्न हुआ।

नोट—इसी प्रकार का विवरण भागवत पुराण स्क० ६। अ० ६ में श्लोक २१ से ३५ तक में दिया है।

समीक्षा—दक्ष की बेटियों के गर्भ से मनुष्य, पशु, पक्षी, जलचर जीव जन्तु, साँप, बिच्छू, घास-फूँस 'वृक्ष' वनस्पति सभी पैदा हो गए। इससे बढ़कर बेतुकी गप्प और क्या होगी। साँप व बिच्छू ने किसी भी औरत को गर्भ में काटा तक नहीं, बबूल, बेरिया, सेहुण के काँटे तक गर्भाशय में नहीं छिदे। ऊँट, हाथी, घोड़े, गाय, भैंस, कुत्ता, बिल्ली, चूहे, छछूंदर, कबूतर, तीतर, बाज आदि सभी औरतों के गर्भाशय में से निकल पड़े। इससे बढ़िया शेखचिल्ली की गल्प क्या होगी? पुराणकार व महाभारत में गप्पाष्टक घुसेड़ने वाला भूल गया, वरना मुसलमानों के खुदा की तरह किसी देवता से कहलवा देता कि 'होजा' और सभी कुछ एकदम हो जाता। इसके अतिरिक्त हम गप्प नं० ४ व ५ में दिखा चुके हैं कि सृष्टि उत्पत्ति का भिन्न प्रकार। (गाय से ब्रह्मा ने सम्भोग करके तथा 'स्रष्टा' के द्वारा प्राणी अप्राणी जगत् की रचना का विधान) पुराण व महाभारत में दिया है तो यह कथा उससे विपरीत होने से स्वयं खण्डित हो जाती है। हमारे विचार से तो यह सब पौराणिक कूड़ेदान की शोभा बढ़ाने वाली एवं पौराणिक धर्म को कलंकित करने वाली गन्दी कहानियाँ मात्र हैं।

सूअर को नमस्कार करो

वामनं ब्राह्मणं दृष्ट्वा वाराहञ्च जलोत्थितम्।
उद्धृतां धरणीं चैव मूर्ध्ना धारयते तु यः॥ ४॥
न तेषां अशुभं किञ्चित् कल्मषं चोपपद्यते।

—(महाभारत अनुशासन पर्व १२६)

अर्थ—जो मनुष्य बौने ब्राह्मण और पानी से निकले सुअर को नमस्कार करता है और उसकी उठाई मिट्टी को मस्तक पर लगाता है ऐसे लोगों का कोई अशुभ नहीं होता है।

समीक्षा—महाभारत में यह व्यवस्था भी उत्तम दी गई है। बौना पौराणिक पण्डित और सूअर दोनों एक ही कोटि में रख दिए गए हैं। गाली गलौज शास्त्री सनातनी पं० माधवाचार्य जी भी ठिगने कद के हैं। यह इनका सौभाग्य है इनके जैसे ही कद के किसी पण्डित ने यह श्लोक महाभारत में घुसेड़ दिया प्रतीत होता है। कुछ भी हो सुअर अकसर कीचड़ में लोटा करता है, उसे देखकर पौराणिकों को उसको ठीक उसी प्रकार

Scanned by CamScanner

सलाम करना चाहिए (अथवा दण्डवत् प्रणाम करें) जैसे कि किसी बौने पण्डित को करते हैं। सुअर के चरणों की रज को सर पर लगावे सुअर को यज्ञ व विवाह में हमारे विपक्षी पौराणिक विद्वानों को प्रेम के साथ दान देवे तो दानदाता का परम कल्याण होता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके लिए पौराणिकों को गोशाला के समान सुअरशालाएँ खोलनी चाहिए, वहाँ पर उनके लिए कीचड़ वाले तालाब बनवाने चाहिए तथा उनके भोजन के लिए वहीं पर बम्बपुलिस (पब्लिक शौचालय) बनवाने चाहिए। उनमें विष्ठा भोजन करने के बाद दोपहर को गरमी में तालाबों में विश्राम करके जब शाम को सुअर उनमें से बाहर निकला करें तो आरती करा कर उनको दण्डवत् प्रणाम भक्त लोग किया करें तो उनकी पूजा व सेवा के लिए हमारे विपक्षी पौराणिक पण्डित व पुजारी नियत होने चाहिए। यह सब इसलिए भी करना चाहिए ताकि यज्ञ-विवाह व मरने पर दान करने के लिए सुअरशालाओं से सुअर सस्ते व समय पर मिल जाया करें। आशा है देश की सनातनधर्म-सभाएँ अब यह व्यवस्था अपने हाथों में ले लेंगी, व हमारे विपक्षी पण्डितों को उनका प्रबन्धक इन्स्पेक्टर बना देगी। शूकर अवतार के वंशज सुअरों से पौराणिक भक्तों व पण्डितों का खूब कल्याण हो। हमारा हार्दिक आशीर्वाद है।

पौराणिक ऋषियों की माताएँ

जातो व्यासस्तु कैवर्त्याः श्वपाक्याश्च पराशरः।
शुक्याः शुकः कणादाख्यस्तथोलूक्याःसुतोऽभवत्॥ २२॥
मृगीजोऽथर्षिशृङ्गोऽपि वशिष्ठो गणिकात्मजः।
मन्दपालो मुनिश्रेष्ठो नाविकापत्यमुच्यते॥ २३॥
माण्डव्यो मुनिराजस्तु मण्डूकीगर्भसम्भवः॥ २४॥

—(भविष्यपुराण ब्राह्मपर्व अ० ४२)

अर्थ—केवट की लड़की कहारी से व्यासजी, खपाली से पाराशर जी, शुकी (तोती) से शुकदेव जी, उल्लू से कणादजी, शृङ्ग ऋषि जी हिरनी से, वशिष्ठ मुनि रण्डी से, नाव चलाने वाली से मन्दपाल जी तथा मेंढकी से माण्डव्य मुनि पैदा हुए थे।

समीक्षा—पौराणिक ऋषि-मुनियों के जन्म भी रण्डी, मेंढ़की, तोती, उल्लू व हिरनी से हुए थे। यह बात विश्वास योग्य तो नहीं प्रतीत होती है। हमारे विपक्षी पौराणिक विद्वानों को चाहिए कि इन उत्पत्तियों को परीक्षण द्वारा सिद्ध करने की चेष्टा करें। वरना लोग यह समझने पर विवश होंगे कि

Scanned by CamScanner

आज कल कोई भी पौराणिक अमोघ वीर्य नहीं है। सब ऐसे वैसे ही हैं या हीनवीर्य अथवा जनखे हैं, क्योंकि पुराणादि में जो इनकी उत्पत्ति की विधियाँ दी हैं वे सुगम हैं। उनके अनुसार पौराणिक विद्वान् सरलता से अमल करके दिखा सकते हैं।

हनुमान् जी को १६ सुन्दरी लड़कियों की भेंट

प्रियाख्यानस्य ते सौम्य ददामि ब्रुवतः प्रियम्॥ ६०॥
गवां शतसहस्रं च ग्रामाणां शातवरम्।
सर्वाभरणसम्पन्ना मुग्धाः कन्यास्तु षोडश॥ ६१॥

—(अध्यात्मरामायण युद्धकाण्ड सर्ग १४)

अर्थ—(राम जब १४ साल बाद वन से लौटे तो हनुमान जी को अपने आगमन की सूचना भरत को देने पहले भेजा। यह शुभ संवाद सुनकर भरत ने हनुमान् जी से कहा) "हे सौम्य! इस प्रिय समाचार को सुनाने के बदले में तुम्हें एक लाख गौ अच्छे-अच्छे सौ गाँव और समस्त आभूषणों से युक्त परम सुन्दरी सोलह कन्याएँ देता हूँ।

समीक्षा—तुलसीदास जी व सनातन धर्म के अनुसार यदि हनुमान् जी बन्दर थे तो भरत जी ने उन्हें १ लाख गौएँ क्यों दीं? बन्दर गायों का क्या करता। यदि दूध पीता होगा तो थन चबा जाता होगा। फिर सौ गाँव भी दिये गए। क्या बन्दर कोई जमीदारी करने गया था। बन्दर तो सारे गाँवों को उजाड़ डालने वाला भयंकर जानवर होता है शहरों में सभी उससे परेशान रहते हैं इससे भी ज्यादा मजेदार बात यह है कि भरत जी ने सोलह बड़ी खूबसूरत लड़कियाँ जेवर पहिना कर उसे भेंट कर दीं। पता नहीं बन्दर ने उन लड़कियों का क्या किया होगा, किसी का दुपट्टा खींच कर फाड़ा होगा तो किसी का रेशमी ब्लाउज व लहंगा व पेटीकोट उतार कर ले भागा होगा। बन्दर को तो हजार दो हजार बन्दरियाँ यदि भेंट दी गई होतीं तो वह भी खुश रहता और बन्दरों का वंश भी बढ़ता। पता नहीं भरत जी की अक्ल कहाँ खो गई थी। और यदि हनुमान् को बन्दर न मान कर आदमी माना जावे, तो सुन्दर-सुन्दर १६ लड़कियाँ भेंट में देकर भरत जी ने उसे व्यभिचारी क्यों बनाया? इस विचित्र पहेली का विपक्षी पौराणिक विद्वानों को उचित समाधान पेश करना चाहिए।

देवताओं के चरित्र का भण्डाफोड़

प्रश्न—अमराणां गुरुः साक्षात् मिथ्यावादी स्वयं यदि।
तदा कः सत्यवक्ता स्याद् राजसस्तामसः पुनः॥

Scanned by CamScanner

हरिर्ब्रह्मा शचीकान्ताः तथास्ते सुरसत्तमाः।
कामक्रोधाभिसन्तप्ताः लोभोपहतचेतसः॥
छले दक्षा सुराः सर्वे मुनयश्च तपोधनाः॥
इन्द्रोऽग्निश्चन्द्रमा वेधा परदाराभिलम्पटाः॥
आर्यत्वं भुवनेष्वेषु स्थितः कुत्र मुने वद॥
उत्तर—किं विष्णुः किं शिवो ब्रह्मा मघवा किं।
बृहस्पतिः देहवान् प्रभवत्येव विकारैः सयुतस्तदा॥
रागी विष्णुः शिवो रागी ब्रह्माऽपि रागसंयुतः।
रागवान् किं कृत्यं वै न करोति नराधिपः॥
पञ्चविंशत्समुद्भूता देहास्तेषां न चान्यथा।
काले मरणं धर्मास्ते सन्देहः कोऽत्र ते नृपः॥

—(देवी भागवत स्कन्द ४। अ० १३)

अर्थ—जब देवताओं के गुरु ही झूठ बोलने वाले हैं तो राजस, तामस गुणों से युक्त मनुष्य सत्यवादी कैसे हो सकता है विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र तथा दूसरे देवता लोग सभी काम-क्रोध-लोभादि से अभिभूत हैं। सारे देवतागण तथा तपोधन मुनि लोग छल करने में दक्ष हैं। इन्द्र, अग्नि, चन्द्रमा, ब्रह्मा ये सभी पर नारियों के लम्पट हैं आर्यत्व संसार में कहाँ है? हे मुनि! यह बताओ।

उत्तर—चाहे विष्णु हो, चाहे ब्रह्मा, इन्द्र या बृहस्पति ही क्यों न हो, शरीरधारी होने से सभी विकारों से युक्त होते हैं। विष्णु भी रागी है, शिवजी भी रागी हैं तथा ब्रह्मा भी रागी हैं। राजन्! रागी व्यक्ति कौन-सा पाप नहीं करता है। उन सभी का देह पच्चीस तत्त्वों का बना हुआ है और समय आने पर वे सभी मरते हैं।

समीक्षा—जब ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि सारे ही देवता छली-कपटी, रागी-मोही तथा परनारियों के लम्पट हैं तो फिर उनमें और राक्षसों में भिन्नता क्या रही? साथ ही फिर ये देवता कैसे बने रहे? इनको राक्षस शिरोमणि क्यों नहीं माना गया है, क्योंकि दुर्गुणों में तो ये लोग राक्षसों से भी बाजी मार ले गये हैं? जब विष्णु व शिवजी इन दुर्गुणों के भण्डार हैं तो अवतार लेकर भी वे महा दुराचारी क्यों नहीं रहे होंगे। शरीरधारी होने से जब प्रत्येक मनुष्य या देवता दुर्गुणों से अभिभूत होता है तो पौराणिक परमात्मा भी शरीरधारी (साकार) होने से दुर्गुणी व दुराचारी नहीं होगा इसमें क्या प्रमाण है? देवी भागवत की दलील यदि सत्य है तो पौराणिक

Scanned by CamScanner

देवता व शरीरधारी इनका साकार परमात्मा साक्षात् दुर्गुणों का भण्डार सिद्ध है, इसे कोई काट नहीं सकता है। शरीरवान् होने से पौराणिक परमात्मा व उनके विष्णु, शिव आदि सभी मौत का समय आने पर मरते हैं। पुराणों के अनुसार जीने-मरने वाला होने से पौराणिकों का कोई अनादि परमेश्वर भी नहीं रह जाता है।

परमात्मा साकार नहीं है

वस्तुमात्रं तु यद् द्रव्यं संसारे त्रिगुणं हि तत्॥ ६९॥
द्रव्यं च निर्गुणं लोके न भूतो न भविष्यति।
निर्गुणः परमात्मा सो न तु द्रव्यः कदाचन॥ ७०॥

—(देवी भाग० स्क० ३ अ० ६)

अर्थ—संसार में जितनी भी चीजें आँख से दिखाई देती हैं वे सब त्रिगुणात्मक हैं। तीनों गुण प्रकृति के हैं परमात्मा के नहीं। वह तो निर्गुण है वह कभी भी आँख से दिखाई नहीं दे सकता है।

समीक्षा—इस प्रमाण ने परमात्मा को साकार मानने वालों को झूठा सिद्ध कर दिया है। साकार न होने से परमात्मा इन्द्रियों का विषय नहीं हो सकता है क्योंकि साकार वस्तु त्रिगुणात्मक होने से इन्द्रियगोचर हो सकती है। साथ ही त्रिगुणात्मक प्रत्येक वस्तु नाशवान् होती है। परमात्मा त्रिगुणात्मक प्रकृति का कार्य नहीं है। अतः जो पुराण व उनके मानने वाले ईश्वर को साकार शरीरधारी एक स्थान पर रहने वाला भक्तों को दर्शन देने वाला—त्रिशूलधारी या शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी बताते हैं वे सभी झूठे हैं। यह पुराण की घोषणा है इस प्रमाण से निराकारवादियों की साकारवादियों पर डिग्री हो जाती है।

कृष्ण को सम्भोग का पति बनाना

सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्नती नेह किं न वधः।

—(बम्बई का छापा सटीक भागवत १०।३१।२)

अर्थ—गोपियों ने कहा—हे सम्भोग के पति कृष्ण! तुम्हारा बिना मोल की हम दासियों को अपने नेत्रों के कटाक्ष से घायल करना क्या हमारा वध करना (कत्ल करना) नहीं है (जो तुम ने हमारा कर डाला है)।

समीक्षा—श्रीकृष्ण जी को गीता तो योगेश्वर बताती है और भागवत पुराण उनको सम्भोग का पति लिखता है। योगीश्वर भी सनातन धर्म में क्या परनारी भोगीश्वर बन सकता है हमारी दृष्टि में महात्मा कृष्ण को सम्भोग का पति बताने वाला भागवत पुराण सनातनी कूड़ेदान में पड़ा हुआ गन्दगी

Scanned by CamScanner

फैला रहा है। इस गन्दे कूड़ेदान की सफाई शीघ्र हो जानी चाहिए। वरना हमारा धर्म इसकी गन्दगी से सदैव संसार में बदनाम होता रहेगा। इस कूड़ेदान के ठेकेदार हमारे विपक्षी विद्वानों को अब अपनी इस सम्पत्ति की या तो सफाई कर डालनी चाहिए या उसमें आग लगाकर उसे नष्ट कर देना चाहिए।

नमूने के तौर पर हमने उपरोक्त ३५ गप्पाष्टक पौराणिक विद्वानों के मान्य शास्त्रों से उद्धृत की हैं हम तो इनको सर्वथा मिथ्या एवं कपोल कल्पित मानते हैं। पर जो हमारे विपक्षी विद्वान् इनको सत्य मानते हों उनसे हमें यह कहना है कि वे इनको सत्य सिद्ध करने में अपनी योग्यता प्रदर्शित करें। और यदि वे हमारे विचार से सहमत हो जावें तो वे इन ग्रन्थों का संशोधन करके या उनको पूर्णांश में सत्य मानना छोड़कर आर्यसमाज की विचारधारा को स्वीकार करें।

हम इस पुस्तक को किसी का दिल दुखाने के लिए नहीं वरन् उन पौराणिक विद्वानों का गर्व मर्दन करने के उद्देश्य से प्रकाशित कर रहे हैं। जो हमारे विरुद्ध निरन्तर विष उगलते रहते हैं तथा जनता के अन्दर मिथ्या पुराणों की मान्यता का गलत प्रचार किया करते हैं। यदि इसे पढ़कर किसी को अप्रिय लगे तो हमारा कहना है कि पौराणिक विद्वानों को इसका उत्तर देने को विवश करें। सच्चाई प्रकट हो जायेगी।

—०—

Scanned by CamScanner